जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

सितम्बर 2017 प्रथम पक्ष पृष्ठ: 52 मूल्य: 7:00 रुपये

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

युग प्रधान श्रमण संघीय पट्टधर आचार्य सम्राट
पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. हीरक जन्मोत्सव विशेषांक

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन-नमन्

आचार्यश्री जी को हीरक जन्मोत्सव पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक वंदन-अभिनंदन

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 11-12/09/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
सितम्बर 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 September, 2017

श्री रतनचंद जी जैन एवं श्रीमती सुमनदेवी जैन

मानव सेवा योजना आधार स्तम्भ

धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रतनचंद जी जैन सुराणा एवं श्रीमती सुमन देवी जी सुराणा जैन

इंदौर (म.प्र.)

मारवाड़ की वीर प्रसुता भूमि में ग्राम कुचेरा निवासी स्व. श्री मूलचंद जी सुराणा जैन एवं स्व. श्रीमती मदनकंवर जी सुराणा जैन के आंगन में सन 1952 में होनहार बालक का जन्म हुआ, नाम रखा गया रतनचंद सुराणा जैन। आपने कुचेरा में अपने माता–पिता के निर्देशन में प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण की। उसके पश्चात् नागौर में माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर कॉलेज की शिक्षा चेन्नई में सम्पन्न की। इसके पश्चात आप पुनः अपने व्यावसायिक क्षेत्र नागौर पधारे। यहां पर 17 वर्ष तक अपने पारिवारिक व्यवसाय में उत्तरोतर अभिवृद्धि की।

आपका विवाह सन 1973 में कुचेरा निवासी स्व. श्री मदनलाल जी एवं श्रीमती मैनाकंवर कुम्भट जैन की सुपुत्री सौ. सुमन देवी जी से हुआ। सन 1992 में आप व्यवसाय हेतु इंदौर स्थानांतरित हो गए एवं आपने सुराणा फाईनेंस के नाम से व्यवसाय प्रारंभ किया। उसके बाद आपने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। व्यावसायिक प्रवृत्ति के साथ–साथ सामाजिक, धार्मिक कार्यों में भी अपनी सेवाएँ प्रदान करने लगे। आपकी समर्पित सामाजिक सेवा को देखकर आपको वर्ष 2008 में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जानकी नगर, इंदौर का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। जिसके बाद आपने चार वर्ष तक निरंतर अपनी सेवाएँ अध्यक्ष के रूप में प्रदान की। वर्ष 2009 में आपने माहसती पू. श्री प्रतिभाश्री जी म. के चातुर्मास में उनकी सद्प्रेरणा से अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए मासक्षमण तप की तपस्या पूर्ण की। आपने उपवास, बेला, तेला, अठाई तक की तपस्या भी पूर्ण की हुई हैं एवं वर्तमान में निरंतर चातुर्मास में दो माह तक एकासन तप की तपस्या भी जारी है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमनदेवीजी भी हमेशा आपके कार्यों में सहयोग प्रदान करती हैं तथा आपकी सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधि में सदा सहभागिता निभाती हैं।

वैसे तो आपका पूरा परिवार श्रमण संघीय प्रथम युवाचार्य पू. श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर' के प्रति असीम श्रद्धा भक्ति रखते हैं। आपके क्षेत्र में चातुर्मासार्थ संत–साध्वी मंडल की सेवा में हमेशा अग्रणी रहते हैं। आपके दो सुपुत्र एवं एक सुपुत्री हैं जो विवाहित हो चुके हैं। बड़े पुत्र श्री हरीशकुमार जी जैन–श्रीमती मनीषा जी जैन हैं जो श्रावक संघ, जानकी नगर, के प्रचार सचिव एवं वर्तमान में कोषाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। छोटे सुपुत्र श्री नितेश जी जैन–श्रीमती जयश्रीजी जैन भी सामाजिक कार्यक्रमों के साथ अपने व्यवसाय में भी अग्रणी है। आपकी सुपुत्री सौ. निशाजी का विवाह चेन्नई निवासी श्री अजय जी गुलेच्छा से सम्पन्न हुआ। वर्तमान में आप चेन्नई में अपने परिवार के साथ सामाजिक, धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय है। आपका पौत्र नमन सुराणा भी बाल्यकाल से धर्म में रुचि रख रहा है।

आपका पूरा परिवार धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के साथ–साथ आर्थिक सहयोग भी प्रदान करता है। पूर्व में आप श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली की जीवन प्रकाश योजना के मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा संचालित श्री वर्धमान स्वास्थ्य केन्द्र संचालक रहे हैं। वर्तमान में आप श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की मानव सेवा योजना के मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष हैं और पूरी तत्परता से अपना कार्य सम्पादन कर रहे हैं।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की मानव सेवा योजना के आधार स्तम्भ बनने पर सुराणा परिवार को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) महेश डाकोलिया जैन (अध्यक्ष- मानव सेवा योजना) राजेन्द्र लोढ़ा जैन (मंत्री-मानव सेवा योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

|| श्री महावीराय नमः || || जय आत्म-आनन्द-देवेन्द्र-शिव || || श्री सीमंधर स्वामीने नमः ||

18 सितम्बर 2017 को

ध्यानयोगी, जैन धर्म दिवाकर, युगप्रधान, श्रमण संघीय के चतुर्थ पट्टधर
आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.के 76वें जन्मोत्सव

एवम्

5 अक्टूबर 2017 को

श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. के 50वें जन्मोत्सव
पर कोटि-कोटि नमन-वन्दन-अनुमोदन ।

हमारे वर्तमान एवं भावी अनुशास्ता के सुयोग्य नेतृत्त्व में श्रमण संघ
निरन्तर प्रगति करता रहे, यही मंगलमय भावना ।

नमन-वंदन-अभिवन्दनकर्ता :

सुनील सांखला जैन

R. R. Residency, Flat # 001, 32/33,
Venkatappa Road, Queens Road Cross,
Bengaluru- 560 051. M.: 98441 33988
E-mail : natcon2006@gmail.com
www.facebook.com/jaihosunil

भावेश मल्टी विजन : 080 2220 6475

Advt

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 | अंक-17 | सितम्बर 2017 | प्रथम पक्ष | 11-12 सितम्बर | मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
सम्मानीय विशेष आमंत्रित मण्डल 2016-18 की सूची		10
वित्तीय वर्ष 2016-2017 के ऑडिटेड अकाउंट		11-19
आचार्यश्री जी ...	पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.	20
आत्मयोगी युगपुरुष ...	पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.	22
निर्वैरी-क्षमाशील ...	पू. श्री प्रकाशमुनि जी म. 'निर्भय'	23
अमर हस्ताक्षर	पू. श्री पंकज मुनि जी म.	24
शिव सूर्य को ..	पू. श्री वरूण मुनि जी म.	25
साधना के शिखर ...	पू. श्री सुप्रभा जी म. 'सुमन'	26
आत्म-ध्यान-साधना ...	पू. श्री कंचनकंवर जी म.	27
आत्मय वंदन अभिनंदन	पू. डॉ. सुप्रभा जी म. 'सुधा'	28
पूज्य आचार्य ...	पू. डॉ. आदर्श ज्योति जी म.	30
शिवाचार्य चरण में ...	पू. श्री विजयश्री जी म. 'आर्या'	33
जैन कॉन्फ्रेंस परिवार का वंदन अभिनंदन		34-36
विश्व विभूति ...	श्री अतुल जी जैन	37
परम्परा संवाहक ...	डॉ. दिलीप जी धींग	38
आचार्यश्री जी	सौ. प्रभा जी जैन	40
समाचार प्रकाश		41

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538538		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष-**श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री-**श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रुचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष -**श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080	41221890		09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

हमारी अनंत श्रद्धा के आयाम - तेजपुँज व्यक्तित्व के धनी परम पू. आचार्यश्री जी

- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

अभी अभी पर्युषण महापर्व संपन्न हुआ। पर्युषण पर्व हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है, हम सभी तप, जप और साधना के माध्यम से आत्मशुद्धि करने का प्रयास करते हैं, अपनी अंतरात्मा में झांकने का प्रयास करते हैं। पर्युषण महापर्व हमें हमारी गलतियों का अहसास कराने वाला पर्व है, गलतियों के लिए, हमारे पापों के लिए जाने अनजाने में हमसे हुई भूलों (गलतियों) के लिए क्षमायाचना करते का पर्व है, चारों कषायों से विरक्त होकर आत्म-परीक्षण एवं आत्म-निरीक्षण करने का यह पर्व है। आप सभी ने इस पर्व में संतों की अमृतवाणी सुनी होगी, जितनी हो सके उतनी तपस्या की होगी, सामायिक एवं प्रतिक्रमण भी किया होगा और सांवत्सरिक क्षमापना भी की होगी, अतः सभी को ढ़ेर सारा धन्यवाद एवं अभिनंदन!

हमारी सबकी हमारे और दूसरों के प्रति यही भावना रही है:-

गलतियों से जुदा तू भी नहीं और मैं भी नहीं,
दोनों इंसा हैं, खुदा तू भी नहीं और मैं भी नहीं,
तुम मुझे और मैं तुम्हें इल्जाम देता हूँ,
अपने अंदर झाँका तू भी नहीं और मैं भी नहीं ।।
गलत फ़हमियों ने बना दी हम दोस्तों में दूरियाँ,
वर्ना फितरत का बुरा तू भी नहीं और मैं भी नहीं।

इसलिए संवत्सरी महापर्व के शुभ अवसर पर

बीत गया सो बीत गया, उसकी चिंता अब क्या करना?
अब जो बाकी जीवन घट है, उसमें तो अमृत भरना है।
कैसे अमृत भरना है?
महक उठेगी दुनिया सारी, यदि क्षमा के फूल खिला लो।
बैर विरोध मिटाकर मनके अंतर के स्नेह का दीप जला लो।

मैं आप सभी से दिल की गहराईयों से 'क्षमायाचना' करता हूँ और मुझे विश्वास है कि आप बड़े क्षमाशील हैं और मुझे मेरी गलतियों के लिये क्षमा करेंगे।

इस पखवाड़े की एक बड़ी महत्त्वपूर्ण विशेषता है। बहुत बड़ा मंगलमय एवं हर्षोल्लास का प्रसंग है। दिनांक 18 सितम्बर को। **पहचाना होगा आपने?**

हमारे सबके युगप्रधान, ध्यानयोगी आचार्य सम्राट परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. का अमृतमहोत्सव हम सभी मना रहे है, 18 सितम्बर को। इन्द्रनगरी इंदौर में आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री चातुर्मास जोर शोर से चल रहा है। श्रमण संघ का ही नहीं पूरे जैन समाज का एवं भारतवर्ष का यह अहोभाग्य है कि **पू. डॉ. शिवमुनि जी म. सा. जैसे हमारी अनंत श्रद्धा के आयाम तेजपुँज व्यक्तित्व के धनी श्रमण संघ के सर्वोच्च पद पर आचार्यपद पर विराजित हैं।**

आचार्य श्री जी ने 30 वर्ष की युवावस्था में संयम पथ पर कदम रखा। संयम पथ पर कदम रखते ही आपने आगम शास्त्रों का अध्ययन करते हुए आत्म-साधना के पथ पर अपने आपको मार्गस्थ किया। आपकी विद्वता, चाणाक्ष बुद्धि, अंतर्मन की सरलता, हृदय की गहराई, चारित्र की उज्वलता और वाणी की मधुरता इन सभी गुण विशेषों के कारण आपने सभी ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संतों का मन जीत

लिया और पुणे के साधु-सम्मेलन में आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. ने आपको युवाचार्य घोषित कर दिया और उसके पश्चात आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. के महानिर्वाण के पश्चात आपको प्रधानाचार्य पद पर घोषित किया गया। आज हम सभी आचार्य भगवन् की अमृतमहोत्सवी जन्म जयंती मना रहे हैं। उनका जीवन और उनकी वाणी के एक-एक मोती हमारे जीवन को एक नयी सोच, नयी राह तथा नयी किरण देने वाले हैं।

भगवान महावीर की साधना को आपने अपने तेज पुँज एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेश की धरती पर भी पहुंचाया है। आपके इन 'साधना शिविरों' से भक्तों में अपने आपको लभान्वित किया है। चाहे गरीब हो, अमीर हो, पढ़ा लिखा हो, अनपढ़ हो, बच्चा हो या वृद्ध, पुरुष हो या नारी, सभी आपके इस 'आत्म ध्यान साधना' में लीन हो गये, बेहोश हो गये और स्वानंद के, आत्मानंद के अनुभूति को प्राप्त कर चुके है। आप ओजस्वी तपस्वी हो, आप में सम्यक ज्ञान, दर्शन, चारित्र का सुंदर संगम हैं। आप के वाणी में सहजता है, सरलता है और मधुरता है। जिनवाणी के प्रति भगवान महावीर के प्रति श्रद्धा फूट-फूट कर भरी है। आपश्री का जीवन दीपस्तंभ के समान समाज को एक नयी दिशा देने वाला है। आप जितने मृदु है, उतने ही प्रसंग आने पर कठोर निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। आप सरलता, उदारता और कठोरता के त्रिवेणी संगम हैं। आपकी वाणी में सदा ही सबका मंगल हो शुभ हो कल्याण हो यही भावना रहती है। अतः हमेशा यह सोच रखते हो कि 'आत्म साधना का जो अमृत मैंने चखा है, मुझे जो अमूल्य साधना सम्पदा समृद्धि प्राप्त हुई है वह सभी को मैं बांट सकूं ताकि सबका कल्याण हो, सबका भला हो और शुभ हो। यह उच्चतम भावना आप हमेशा मन में रखते हो और आपके प्रवचन में इस भावना का उद्घोष करते हो।

इंदौर नगरी में आपने अपनी अमृतवाणी से हजारों भक्तों को लाभान्वित किया। वर्षा की तरह आपकी अमृतवाणी बरसती है और हजारों भक्तों को भाव भक्ति से उसमें डूबोती है। आप साधना के शिखर हो, मानवता के मसीहा हो और श्रमण संघ के लिए एक महाशक्तिशाली विभूति हो। आप ध्रुव तारे के समान भूले भटके भक्त को रास्ता दिखाते हो। आपश्री की निर्णय क्षमता को हम अभिवादन करते हैं, नमन करते हैं, वंदन करते है, प.पू. महेन्द्रऋषि जी म. जैसे सरल, ज्ञानी, ध्यानी, संयमी एवं सबको साथ लेकर चलने वाले युवा संत को आपने युवाचार्य बनाया, यही आपकी दर्यादिली एवम कुशाग्रता की पहचान है। आपको आपके अमृतमहोत्सव जन्म दिन पर मैं हमारे अध्यक्ष जी और जैन कॉन्फ्रेंस परिवार के सदस्यों की ओर से लख-लख शुभकामनाएं देते हुए करबद्ध होकर भगवान से प्रार्थना करता हूँ:-

हर खुशी, खुशी मांगे आपसे
हर फूल खुशबू माँगे आपसे
हर दीपक रोशनी माँगें आपसे
इतनी ऊर्जा हो आपमें की
सूरज भी प्रकाश माँग आपसे।
आपश्री को वंदन्! नमन्!! अभिवादन!!!

दिनांक 17सितम्बर को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की इंदौर, मध्य प्रदेश में शिवाचार्य समवशरण के प्रांगण में प्रबंध समिति, कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभा रखी गई है। अतः अपनी -अपनी सदस्यता के अनुसार उपस्थित रहें यह अनुरोध करता हूँ और 18सितम्बर को **'आचार्यश्री के अमृतमहोत्सवी' जन्म दिवस पर सभी उपस्थित होकर एक अनोखे, सुंदर और यादगार समारोह, को अपने दिल में अंकित करें यह प्रार्थना करता हूं।**

जय महावीर!

।।नमो लोए सव्व साहुणं।। ✧✧

अध्यक्षीय उद्‌गार

मेरी असीम श्रद्धा के केन्द्र परम पूज्य आचार्यश्री जी

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्माननीय बन्धुओं,

सादर जय जिनेन्द्र!

श्रमण संस्कृति त्याग प्रधान है, ये भोग से योग की ओर चलने का आदेश, संदेश देती हैं। समय-समय पर इस महान दिव्य संस्कृति ने भारतवर्ष को ही नहीं अपितु विश्व को ऐसे नवरत्न दिए जिन्होंने स्व-पर कल्याण करते हुए विश्व के समक्ष सूर्य प्रकाश के समान न्याय मार्ग, भक्तिमार्ग और मोक्ष मार्ग का आदर्श प्रस्तुत किया।

इसी श्रृंखला में महिमामयी पुण्यभूमि मलौट मण्ड़ी में भी एक ऐसी पुण्य आत्मा ने अवतार लिया। पूर्व जन्मों के संस्कारों के प्रभाव से जब आचार्य भगवन ने श्रमण मार्ग अपनाने की भावना व्यक्त की तो आपश्री जी के परिवार वालो ने भांति-भांति के प्रलोभन देकर संसार एवं संसारी जीवन जिए इसके प्रयास किये, किन्तु आपकी आसक्ति के तन्तु टूट चुके थे।

आपका दृढ़ निश्चय, आपके साधना के संस्कार इतने परिपक्व थे कि आप देश-विदेश में परिभ्रमण करने के पश्चात भी सांसारिक जीवन को बन्धन से युक्त समझकर उससे मुक्त होने की सुदृढ़ इच्छा ने अणगार धर्म प्राप्त कर ही लिया।

संत भारतीय संस्कृति की प्राणभूत संजीवनी शक्ति है। संतजन त्याग और तपस्या के बल पर स्वयं तो भव सागर से तर जाते है तथा धर्म एवं ध्यान का मार्ग दिखला कर औरों को भी तार देते हैं। भारतीय संस्कृति को हजारों वर्षों तक अक्षुण्य बनायें रखने का उत्तरदायित्व संतों पर ही रहा हैं। भारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण श्रमण परम्परा भी तप, त्याग की दिव्यता से आलौकित हैं। शुभ्र, श्वेत वस्त्रों सें झांकता हुआ आलौकित व्यक्तित्व जिसे निहारते ही हृदय आनन्द के अतिरेक से झुम उठता है, जिनका अन्तरमानस जन-जन के कल्याण की कामना से आप्लावित है, जिनकी वाणी हृदयस्पर्शी तथा जीवन के कण-कण को प्रभावित करने वाली हैं, जिनकी दिशा जन-मानस को सुधारने वाली है, जिनका कर्म एवं धर्म व्यक्ति के भाग्य को बदलने वाला है तथा जिनका तप एवं जप विश्व के तनाव एवं मनमुटाव को दूर करने वाला है, जिनकी मंगलमैत्री जन-मन में मंगल को भरने वाली हैं। ऐसी दिव्य विभूति, सागर सम गंभीर, ज्ञान एवं ध्यान के भण्डार, श्रध्दा के केन्द्र संयम शिरोमणि पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की भरपूर कृपा मुझे मिली। गुरुवर के सान्निध्य में मैंने समझा कि परमगुरु का व्यक्तित्व गहन गंभीर है और बहुत सारे दुर्लभ रत्न उनमें समाहित हैं।

आचार्यश्री जी के हीरक जन्मोत्सव पर यशस्वी, तपस्वी, मनस्वी जीवन के लिए मेरी शुभ मंगल कामना करते हुए यही भावना रखता हूँ कि आपका आशीष रूपी अमृत श्रमण संघ को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त होता रहें एवं मुझ पर भी आपकी दिव्य दृष्टि प्रतिपल प्रतिक्षण बनीं रहें ऐसी अभ्यर्थना। अभिप्सा के साथ कोटिश वन्दन! ✧✧

ध्यान साधना का प्रयोग तथा मंगल मैत्री

- केसरीमल बुरड़ जैन, चेयरमैन विश्वस्त मण्डल, जैन कॉन्फ्रेंस

श्रमणसंघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. का पावन हीरक जन्मोत्सव सकल संघ का जन्मोत्सव है। ध्यान साधना का प्रयोग तथा मंगल मैत्री के द्वारा सकल समाज के आध्यात्मिक उत्थान का महान कार्य आचार्यश्री जी के द्वारा हो रहा है, जो कि समस्त संघ के लिए गौरव और सौभाग्य की बात है। आचार्य जी ने पंजाब की पावन धरा पर जन्म लेकर समूचे भारवर्ष को अपने पगों के सहारे प्रभु महावीर की वाणी से सिंचित किया है। भगवान महावीर का धर्म 'सर्वोदय की गहन मूलभित्ति पर आधारित है। वर्तमान में इस 'सर्वोदयी धर्म गंगा' को सर्वत्र प्रवाहित करके कषाय-विषय के पाप-ताप, संताप से श्रद्धालुओं को बचाने का प्रयास करना संघ के आचार्य का पुनीत कर्त्तव्य है, जिसकी सफलता के लिए आचार्य जी अहर्निश प्रयत्नशील हैं। इस जगत में फूलने-फलने वाली सभी धर्म परम्पराएं अन्य बातों में एक-दूसरे से भिन्न होकर भी 'ध्यान' में आकर सब एक हो जाती हैं। ध्यान अध्यात्म का वह मार्ग है जिसे छोड़कर कोई भी परम्परा फल नहीं सकती। प्रभु महावीर के द्वारा प्रदत्त ध्यान के भेद-प्रभेदों तथा उनके स्वरूपों के वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि भगवान महावीर ध्यान-साधना के उत्कृष्ट विशेषज्ञ थे। उन्होंने अपने उपदेशों में 'सामायिक' ध्यान को सर्वोत्तम भेद बताया है। यह सकल समाज का परम सौभाग्य है कि भगवान महावीर की उस पावन 'ध्यान' पद्धति को आचार्य जी समूचे समाज में पुनः प्रसारित और प्रचारित करवा रहे हैं। ऐसे सिद्ध महापुरुष के जन्मोत्सव पर मेरी बारंबार बधाई, एवं अच्छे स्वास्थ्य की शुभ मंगल कामनाएं।

✧✧

ध्यान साधना का प्रयोग तथा मंगल मैत्री

- विलास लोढ़ा जैन, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

युग प्रधान, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिव मुनि जी म. सा. का हीरक जन्मोत्सव मनाना हम सभी के लिए बड़े ही सौभाग्य की बात है। यह एक ऐसा अवसर है, जो विरले को ही देखने को मिलता है। आचार्यश्री जी ने ध्यान-साधना के माध्यम से अपने आप में अन्तर तप का एक भेद उत्पन्न किया है तथा श्रावक-श्राविका वर्ग को अपने ज्ञान से तप साधना की ओर अग्रसर कर रहे हैं। क्योंकि ध्यान-तप से तपा हुआ साधक ही सम्यक् ज्ञान को उपलब्ध कर पाता है। आचार्य जी इस महान ध्यान साधना के स्वयं प्रयोगकर्त्ता हैं। इतना ही नहीं उन्होंने इसके साथ अनशन तप का भी प्रायोगिक अभ्यास पिछले तीस वर्षों से भी अधिक समय से अनवरत किया है और आगे भी कर रहे हैं।

यह श्रमण संघ का सौभाग्य है कि आपके जैसा तपस्वी और सत्यान्वेषी आचार्य इसका संचालन कर रहा है। मैं कृतज्ञता पूर्वक आपके चरणों में नमन करता हूँ। आपकी पवित्र छत्राछाया में श्रमण संघ का सर्वतोमुखी विकास हो और संत-सतियों की प्रतिभा/योग्यता का लाभ सकल समाज को मिले, इस मंगल मनीषा के साथ जन्मोत्सव पर अनेकानेक बधाइयाँ अर्पित हैं।

✧✧

Prakash Jain & Co.
Chartered Accountants

Flat No. 6326, Sector B, Pocket 9,
Vasant Kunj, New Delhi - 110070
Phone/Fax: 011-41563827
Mobile: 9811373409
E-mail: rpshukla9@yahoo.com
rpshukla9@gmail.com

AUDITOR'S REPORT

We have audited the attached Balance Sheet of **SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWAI JAIN CONFERENCE** 12, Shaheed Bhagat Singh Marg, Gole Market, New Delhi - 110001 and also the Income and Expenditure Accounts for the year ended on that date, and annexed thereto, These financial statements are the responsibility of the managemnet. Our responsibility is to express on opinion on these fianancial statemments based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance. Whether the financial statement are free of material misstatement. An audit includes examining on a test basis, evidence supporting the amount and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall financial statements presentation. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

That subject to notes to the accounts attached to this report.

We report that :

a) We have obtained all the information explanation which to the best of our knowledge and belief, were necessary for the purposes of our audit;

b) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account dealt with by this report are in agreement with the books of account;

c) In our opinion, to the best of our information and accordig to the explanation given to us, the said accounts, read with the notes thereon, give a true and fair view;

- **a)** In the case of the Balance Sheet, about the state of the affairs of the Organisation as at March 31, 2017 and;
- **b)** In the case of the Income and Expenditure Account of the excess of Income over Expenditure for the year ended on that date.

For Prakash Jain & CO.
Chartered Accountants
FRN 007405N

Sd/-
(Rajendra Prasad)
Partner
M. No. 087739

Place : New Delhi
Date : 09.08.2017

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2017

AS AT 31.03.16	LIABILITIES	AS AT 31.03.17	AS AT 31.03.16	ASSETS	AS AT 31.03.17
8,764,651	**Capital Fund** Balance as per last Balance Sheet 8,764,651	8,764,651	9,705,095	**Fixed Assets** (As per Schedule - 5)	8,964,950
36,765,450	**Corpus Fund** Balance as per last Balance Sheet 36,765,450 Add:- Life Membership Subscription Received 1,498,000 Add:- Trf from Computer Education Yojana 117,296 Add:- Tfr from Indore Sammellan 2,824,208	41,204,954	26,345,774 1,669,371	**Investments** Fixed Deposits & Bonds (As per Schedule - 2) 16,155,061 Interest accrued & reinvested (As per Schedule - 2) 1,548,693	17,703,754
1,632,442	**Intended Membership Fees** (Pending Membership Confirmation) Balance as per last Balance sheet 1,632,442 Add:- Receipts during the year 2,683,520 Less: trf to Corpus Life Membership Fees (1,498,000) Less: trf to J.P. Subscription 1,089,000	1,728,962	1,889,759	**Current Assets, Loans & Advances** **Advances Recoverable** (As per sechedule 3) 13,978,327	
656,405	**Jeevan Prakash Yojana** Balance as per last Balance Sheet 656,405 Add:- Receipts during the year 487,100 Less: Expenditure during the year (681,295)	462,210	1,881,080 15,855	**Rent Receivable** 1,877,647 **Security Deposits** (As per Schedule -3) 14,355	
(2,655)	**Jeev Daya Yojana** Balance as per last Balance Sheet(2,655) Add:- Receipts during the year 2,701 Less: - Expenditure during the year) -	46	725,945 1,492,437	**Tax Deducted at Source** 1,332,982 **Cash & Bank A/C Balances** (As per sechedule 3)	17,203,311 1,552,537
3,114,208	**Indore Sammellan A/c** Balance as per last Balance Sheet 3,114,208 Add:- Receipts during the year 410,000 Less: - Expenditure during the year) (700,000) Less: trf to Corpus Fund (2,824,208)	-			
50,930,501	**Carried forward**	52,160,823	43,725,316	**Carried forward**	45,424,552

Contd. ..... to Page 2

50,930,501	Brought forward	52,160,823	43,725,316	Brought forward	45,424,552
82,559	**Library Yojana** Balance as per last Balance Sheet	82,559	12,551,626	**Income and Expenditure A/c** Balance as per last Balance sheet 12,551,626 Add: Excess of Income over Expenditure 290,085	12,261,541
117,296	**Computer Education Yojana (Yuwa Wing)** Balance as per last Balance Sheet 117,296 Less: Trf to Corpus Fund (117,296)	-			
-	**Vayavach Samiti** Balance as per last Balance Sheet Add:- Receipts during the year 35,000 Less: - Expenditure during the year) (21,290)	13,710			
17,746	**Manav Sewa Yojana** Balance as per last Balance Sheet 17,746 Add:- Receipts during the year 505,000 Less: - Expenditure during the year) (368,500)	154,246			
1,950	**Advances & Deposits** Balance as per last Balance Sheet 1,950 Less: - Advance Subscription W/o (800)	1,150			
3,867,560	**Security Deposits Received from Tenants**	3,912,360			
1,259,330	**Current Liabilities & Provisions** Other Current Statutory Liabilities (SCHEDULE - 1) 680,384 Sundry Creditors (SCHEDULE-1) 289,220 Expenses Payable (SCHEDULE-1) 391,642	1,361,246			
56,276,942	**TOTAL**	57,686,094	56,276,942	**TOTAL**	57,686,094

Note : Significant accounting policies & notes on account as per schedule 1

Sd/-
Mohanlal Chopda Jain
National President

Sd/-
Dr. Ashok Kumar N. Pagariya Jain
National General Secretary

Sd/-
Mahendra Bokriya Jain
National Treasurer

Auditors Report
As per our audit report of even date attached
For Prakash Jain & Co.
Chartered Accountants
F.R.N:- 007405N

Sd/-
Rajendra Prasad
Partner
M.No:- 87739

Place : New Delhi
Date : 09.08.2017

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

INCOME & EXPENDITURE FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2017

PREVIOUS YEAR FIGURES (Rs.)	EXPENDITURE	CURRENT YEAR FIGURES (Rs.)
	To Conf. Bhawan	
1,955,776	Salary & Wages and other allowances (Sch-4)	1,907,143
2,085,807	Repair & Maintenance (Sch-6)	414,954
1,153,547	Electricity Charges	909,350
43,754	Water Charges	58,844
64,877	House Tax	64,877
694,587	Rest House Keeping	293,438
105,260	Rest House T.V. Cable Charges	85,133
6,103,608	**TOTAL - A**	**3,733,739**
	To Jain Prakash Expenses	
5,669,272	Paper & Printing Charges	5,707,945
421,054	Salary & Other allowances (Sch-4)	412,908
982,757	Postage & Mailer Charges	1,038,769
7,073,083	**TOTAL - B**	**7,159,622**
	To Activities Expenses	
2,236	FDR Interest Written Off	-
334,413	Sadhu Sadhvi Seva Expenses	431,951
48,893	Election Related Expenses	3,737,086
-	Calender Exp.	27,535
252,308	Meeting Expenses	181,145
131,502	Bird Hospital Exp. (Sch-4)	24,559
858,403	Youth Wing Exp.	-
88,716	Women Wing Exp.	26,348
-	Excess Provision W/o	138,593
1,716,471	**TOTAL - C**	**4,567,217**
14,893,162	**Carried forward A+B+C**	**15,460,578**

Contd. ..... to Page 2

Contd..... From page 1

PREVIOUS YEAR FIGURES (Rs.)	INCOME	CURRENT YEAR FIGURES (Rs.)
	By Conf. Bhawan	
2,344,224	Rental Income	7,603,662
2,344,224	**TOTAL - A**	**7,603,662**
	By Jain Prakash Income	
1,564,775	J. P. Donation	797,877
1,000	J. P. Subscription	800
-	trf From Life Membership Fees	1,089,000
1,565,775	**TOTAL - B**	**1,887,677**
	By Other Income	
2,134,729	Interest on FDR'S & Bonds	1,169,234
114,050	Interest on SB A/cs	121,667
55,236	Interest on Income Tax Refund	30,415
1,500	Election Related Receipts	2,063,700
-	Calender Related Receipts	168,100
7,199,420	General Donation	5,966,850
49	Sundry Creditior Bal W/O	1,413
706,00	Youth Wing Donation	-
4,000	Women Wing Donation	51,000
10,214,984	**TOTAL - C**	**9,572,379**
14,124,983	**Carried Forward A+B+C**	**19,063,718**

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

INCOME & EXPENDITURE FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2017

PREVIOUS YEAR FIGURES (Rs.)	EXPENDITURE	CURRENT YEAR FIGURES (Rs.)
14,893,162	**Brought Forward A+B+C**	**15,460,578**
	To Administration Expenses	
1,275,755	Salary and Other Allownces (Sch-4)	1,125,399
439,780	Security Staff Salary & Allownces (Sch-4)	420,153
42,398	Refreshment Exp.	32,673
44,715	Telephone Exp.	46,640
35,307	Postage, Telegram & Courier	76,924
145,269	Printing & Stationery	135,631
7,595	Bank Charges & Locker Rent	27,087
16,508	Staff Conveyance	27,527
13,648	Scooter Expenses	5,392
258,836	Repair & Maintenance (Schedule - 6)	287,719
45,800	Audit Remuneration	45,800
236,287	Legal & Professional Expenses	286,329
36,500	Diwali Expenses	11,800
840,184	Depreciation on Fixed Assets	793,816
18,319	Interest on TDS & Service Tax	8,905
3,456,901	**TOTAL - D**	**3,331,795**
-	To Excess of Income Over Exp. trf. to B/S	290,085
18,350,063	**TOTAL - A+B+C+D**	**19,082,458**

Contd..... From page 1

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

INCOME & EXPENDITURE FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2017

PREVIOUS YEAR FIGURES (Rs.)	INCOME	CURRENT YEAR FIGURES (Rs.)
14,124,983	**Brought Forward A+B+C**	**19,063,718**
45,181	Sale of Scraps	18,740
45,181	**TOTAL - D**	**18,740**
4,179,899	By Excess of Exp. Over Income trf. to B/S	-
18,350,063	**TOTAL - A+B+C+D**	**19,082,458**

Sd/-
Mohanlal Chopda Jain
National President

Sd/-
Dr. Ashok Kumar N. Pagariya Jain
National General Secretary

Sd/-
Mahendra Bokriya Jain
National Treasurer

Auditors Report
As per our audit report of even date attached
For Prakash Jain & Co.
Chartered Accountants
F.R.N:- 007405N

Sd/-
Rajendra Prasad
Partner
M.No:- 87739

Place : New Delhi
Date : 09.08.2017

SCHEDULE - 1

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

SIGNIFICANT ACCOUNTING POLICIES AND NOTES ON ACCOUNTS FORMING PART OF BALANCE SHEET FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2017

1. SIGNIFICANT ACCOUNTING POLICIES:

A. Income

(i) Donation receipts are accounted for on receipt basis as they are voluntary. Interest on investments in FDR's and Bonds have been accounted for on accrual basis.

(ii) License fees/Rental incomes have been accounted for on accrual basis except in cases where the matter is disputed & subjudice, taken on receipt basis.

B. Expenditure

All statutory dues and other expenditure have been accounted for on accrual basis.

C. Depreciation

Depreciation on fixed assets have been charged on W.D.V. basis as per rates provided in the Income Tax Act, 1961.

D. Fixed Assets

Fixed Assets have been accounted for at cost of acquisition less depreciation.

E. Investments

This being a charitable institution, all investments have been made in FDR'S and Bonds with Banks and Public Sector undertakings, Govt. of India as specified u/s. 11(15) of Income Tax Act, 1961.

2. NOTES ON ACCOUNTS:

(i) Income & Expenditure on activities through funds shown directly in Balance Sheet are as follows:

S. No.	Particulars	2015-16		2016-17	
		Income	Expenditure	Income	Expenditure
1.	Jeevan Prakash Yojana	1,352,000	1,288,987	487,100	681,295
2.	Jeev Daya Yojana	71,300	167,646	2,701	-

3.	Library Yojana	0	0	0	0
4.	Manav Sewa Yojana	0	79,158	505,000	368,500
5.	Vayavach Samiti	0	0	35,000	21,290
6.	Indore Sammellan A/c	5,929,034	5,389,966	410,000	700,000
	Total	**7,352334**	**6,925,757**	**1,439,801**	**1,771,085**

(ii) Rent recoverable from tenants exceeding 3 years considered good from recovery.

(iii) Previous year's figures have been re-grouped/reclassified wherever considered necessary to conform to this year's classifications.

(iv) Figures have been rounded off to the nearest rupee.

3. **CONTINGENT LIABILITIES NOT PROVIDED FOR IN ACCOUNTS:**

L & Do Department under Ministry of Urban Development, Government of India had issued a show cause notice in Financial Year 2006-2007 to explain why demand of approximately Rs. 14 Crores may be made for using residential property for commercial purposes. This Matter not yet been settled.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
Mohanlal Chopda Jain	**Dr. Ashok Kumar N. Pagariya Jain**	**Mahendra Bokriya Jain**
National President	National General Secretary	National Treasurer

आचार्य श्री शिवमुनि जी म. के हीरक जन्मोत्सव पर ...

- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

जिसके जन्म से परिवार धन्य हुआ, जिसके संयमपथ पर बढ़ने से जिनशासन जयवंत बना, जिसके नेतृत्व में संघ ने साधना के नये क्षितिज को प्राप्त किया, ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी है युगप्रधान आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म.सा.।

पंजाब मंगलदेश की पावन माटी मलोटमंडी में ओसवाल कुल में वीरमाता विद्यादेवी तथा वीर पिता श्री चिरंजीलाल जी के घर में एक कुलदीपक ने जन्म लिया। संयुक्त परिवार के मधुर-स्नेहिल-भावनाशील धार्मिक वातावरण में उस बालक के संस्कारों का सिंचन-संवर्धन हुआ। परिवार ने जिसका नाम बड़े लाड प्यार से नाम शिवकुमार रखा था। वही बालक अपनी शालेय शिक्षा को ग्रहण करता हुआ यौवन की ओर बढने लगा। परिवार की धर्मभावना के कारण निरंतर संत-सतियो के सानिध्य सेवा का अवसर प्राप्त होता था। शिवकुमार के इस प्रकार सहज ही संत समागम के माध्यम से अन्तर्जगत में, अवचेतन में धर्मसंस्कार प्रगाढ़ रूप धारण कर रहे थे।

अल्पभाषी, हंसमुख, प्रसन्न व्यक्तित्व का धनी ऐसा वह युवक गुरूदेव श्री ज्ञानमुनि जी के सान्निध्य में पहुंचा। अपने भीतर प्रभु महावीर के प्रति असीम श्रद्धाभाव, गुरू के प्रति अनन्य विनयभाव तथा साधना जगत के प्रति अनिवार्य जिज्ञासा, पिपासा को धारण कर अपने गुरुदेव पूज्य श्री ज्ञानमुनि जी म. के सन्निधि में रहने लगे। प्रतिभा-लगन के बल पर आपने गुरूदेव का दिल जीता और जैन दर्शन के अनेक ग्रन्थों-विषयों को आत्मसात कर लिया। जब संयम की बात आई तो शरीर से सुकुमाल, परिवार से सुसम्पन्न ऐसे शिव को परिवारजनों ने रोकने की खूब चेष्टा की, पर वह धुन का धनी फक्कड़, अलबेले स्वभाव का, अलमस्त युवा अपने बात पर अडिग रहा। परिणामतः परिवार झुका और शिवकुमार शिवमुनि के रुप में जिनशासन में समर्पित हो गये।

संयम ग्रहण करने के बाद ज्ञान साधना में संलग्न मुनि का चित्त धयान साधना को जानने, अपनाने के लिए समुत्सुक था। इस हेतु शोधयात्रा चलने लगी। पंजाब से राजस्थान, मध्य प्रदेश होते हुए महाराष्ट्र तक की विहार यात्रा में स्थान-स्थान पर संतो, महापुरुषों का समागम होता रहा। आशीर्वाद अनुभव मिले किन्तु ध्यान की विधा, प्रभु महावीर तथा तीर्थंकरों की साधना का प्रायोगिक रुप नहीं मिल पा रहा था। तथापि, हिम्मत नहीं हारी, ध्यान साधना के अन्य स्थानों पर चलने वाले प्रयोगों से अपनी साधना को आगे बढाने का पुरुषार्थ करते रहें।

वर्तमान जैन उपासना-साधना के क्षेत्र में ध्यान के प्रयोग नहींवत ही है। कुछ मनीषियों ने आगम स्वाध्याय तथा अनुभव के आधार पर कतिपय प्रयोग किये किन्तु वे सीमित दायरे में सिमटकर रह गये। गहरी अनुभूति तथा ठोस भूमिका के अभाव में विकसित न हो सकें। जैन समाज में व्याप्त, प्रचलित अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में ध्यान उपेक्षित सा रह गया। अपारंपरिक ध्यान साधना मात्रा माला-जाप आदि की तरह दैनंदिन आराधना का एक हिस्सा बन गई। भगवान महावीर की ध्यान साधना विशिष्ट विधि है, जो आत्मा को परमात्मतत्व तक पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। आत्मा को अनादिकाल से लगे कर्मो के राजा मोहनीय कर्म को घटाने-हटाने की युक्ति ध्यान साधना से प्राप्त होती है। मोह का सबसे बड़ा आधार

पौद्गलिक देह है। इस देह के प्रति रही तीव्र आसक्ति को कम करने की शक्ति ध्यान साधना में है। इस तथ्य को खोजने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रही।

उत्तर से दक्षिण तथा दक्षिण से पुनः उत्तर की ओर पदयात्रा भी जारी रही। उसी दरमियान उपवास के एकान्तर तप की साधना प्रारंभ हुई। संयमपूर्व की सुकुमाल देह तपकी अग्नि में तपकर निखरने लगी। एकांन्तर तप इस तरह जीवन में समाहित हुआ कि सैंकड़ो आराधकों को एकान्तर तप की प्रबल प्रेरणा मिली। तप आपके लिये प्रदर्शन नहीं अपितु आत्मनिरीक्षण-परीक्षण-शुद्धिकरण का माध्यम बना। आपकी तपाराधना काया तक सीमित न रहकर उससे आगे बढ रही थी। विविध ध्यान पद्धतियों के प्रयोग से आप की चेतना को काया-वाणी से भी आगे मन की, मन में भी अवचेतन मन की गइराईयों का स्पर्श होने लगा। इस समग्र प्रक्रिया में जहां आप अंतर की ओर बढ़ रहे थे वहीं बाहर संघ-समाज में आपकी साधना को लेकर अनेकों प्रवाद पनप रहे थे। आपश्री को खूब संघर्ष-विरोध की आंच से गुजरना पड़ रहा था। तथापि आपका आत्मविश्वास प्रगाढ था, साधना के प्रति लगाव सभी विरोधों से भी अधिक समर्थ था।

आपकी उत्तर-दक्षिण-उत्तर यात्रा में आप श्रमण संघ में मुनिपद से मंत्री, मंत्री से युवाचार्य तथा युवाचार्य से आचार्य पद तक प्रवास कर चुके थे। दिल्ली में सैकड़ों साधु-साध्वी की मंगलमय उपस्थिति में चतुर्विध संघ ने आपके संघ नायकत्व की चादर आपको सादर अर्पण की। आपने संघ की बागडोर हाथ में लेने के बाद भी अपनी साधना का प्रवास जारी रखा। आपके प्यास, प्रयास, पुरुषार्थ को परमात्मा की कृपा का प्रसाद मिला। आपको आत्मध्यान साधना का वह मार्ग उपलब्ध हुवा जो ओझल सा हो गया था। जैसे कोलंबस को अमेरिका महाद्वीप को खोजकर कृतकश्त्यता का, दीर्घकालीन जल प्रवास की सार्थकता का अनुभव हुआ होगा। उससे किंचित अधिक आत्मसंतोष-तृप्ति का अनुभव आपने आत्मध्यान साधना की प्राप्ति में अनुभव किया। इस साधना के प्राप्त होने पर आपको भगवान महावीर के आगमों में, सिद्धांतो में, संस्मरणों में, तत्वचर्चाओं में छिपे गूढ़तत्व का साक्षात्कार हुआ। आपने अपने ध्यान साधना में आत्मदृष्टि को सम्मीलित करके अपनी साधना को एक लक्ष्य पर केन्द्रित कर दिया। सिद्धासिद्धिं मम दिसंतु आपके जीवन चर्या का अभिन्न अंग बन गया। आपके मन-वाणी-व्यवहार आचार आत्म साधना से अनुप्राणित हो गये। ध्यान कुछ क्षणों का मौन न रहकर अहोरात्रा, श्वास-श्वास में, हर धड़कन में, पल-पलका संगी-साथी बनने की विधि उपलब्ध हुई। आपने ध्यान में जीना प्रारंभ कर दिया।

वर्तमान में स्पर्धत्मक, भोगवादी, सुविधाजीवी जीवन शैली में फंसी युवापीढी और सामान्य जनता तथा क्रिया के, कट्टरता के पाश में बंधी धार्मिक जनता महावीर के साधना, सिद्धांतों से अपरिचित अपने जीवन को एक घुटन के साथ जी रही है। ऐसी विषम परिस्थिति में मानवमात्रा के लिए एक आशा की किरण इस साधना के माध्यम से उपलब्ध हो रही है। युवापीढी, सामान्य जनता तथा धर्मिक जनता सभी के लिये समान रुप से आश्वासक, उपयुक्त यह साधना पद्धति है। इस आत्म ध्यान साधना पद्धति के प्राप्ति तथा जन-जन में पहुंचाने हेतु आपके द्वारा किये गये पुरुषार्थ को कोटि-कोटि नमन।

आपके द्वारा प्रदत्त यह साधना समस्त भव्यात्माओं के भीतर रहे शुद्धात्मा को प्रकट करने में आलम्बन बनें यही आशीर्वाद आपके द्वारा प्राप्त हो। आपकी साधना दीर्घकाल तक समाधिपूर्वक अविरत चलती रहे तथा जन-जन के लिऐ पथ प्रदर्शन करती रहे यही हीरक जयंती वर्ष में मंगलकामना।

✧✧

हीरक जयन्ती पर विशेष...

आत्मयोगी युगपुरुष आचार्य श्री जी का जन्म दिन बार-बार आए...

- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.

पंजाब की धरती वीरों, सपूतों और संतों की धरती है। इसी धरती पर माता विद्यावती के लाल आचार्य श्री शिवमुनि जी म. का जन्म लेना अपने आप में एक अहिंसक वरदान है। आचार्य भगवन् एक सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर लाला श्री चिरंजीलाल जी के होरहार सुपुत्र के रुप में दिन दूने रात चौगुने विकसित होते गए। एम.ए.,पीएच.डी, डी.लिट तक की उच्च शिक्षा ग्रहण की। दादा गुरु आचार्य श्री आत्माराम जी म. के धर्मसंघ का गौरव बढ़ाने के लिए आपने ज्ञान के गौरीशंकर महामहिम श्री ज्ञानमुनि जी. म. की निश्राम में दीक्षा ग्रहण करके श्रमण संघ को एक अद्वितीय भविष्य की ओर ले जाने का प्रयास किया। आपका चादर समारोह जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में दिल्ली में अखिल भारतीय स्तर पर सम्पन्न हुआ।

आचार्य भगवन ने आदर की चादर स्वीकार करते ही ध्यान और धर्म की धारा को मोड़ देने का विशेष प्रयास किया। आपश्री जी भगवान महावीर का ध्यान पद्धति के शोधक आर्चा हैं। आपने इस संबंध में विपुल साहित्य का सृजन किया है। जब भी आपके सान्निध्य में हम लोग बैठते हैं तो यह अनुभव करते हैं कि आगम वर्णित आप्त वाणी को ग्रहण कर रहे हैं। आप जो भी बोलते हैं तोलकर बोलते हैं, हृदय से बोलते हैं। आपके रोम-रोम में मैत्री भाव का अमृत बरसता है लेकिन कोई यह न माने कि आप किसी तरह की लाग लपेट पसन्द करते हैं। आप जितने गहन चिंतक है, उतने ही स्पष्ट वक्त भी है। मंच से आप जब बोलते हैं तो बड़ी से बड़ी हस्ती को सार्थक शिक्षा देने में कहीं चूकते नहीं। आज श्रमण संघ संसार का सबसे बड़ा जैन संघ है। उसके एकमात्र शास्ता के रुप में आप अपना गंभीर दायित्व निभा रहे हैं। आपकी मंगल देशणा से सम्पूर्ण समाज लाभान्वित है।

आपने जहां-जहां कदम रखा है, अहिंसा और शांति का वातावरण स्वतः निर्मित होता चला गया है। हमारा सौभाग्य है कि आप जैसे युगपुरुष, युगप्रधान आचार्य को हम प्रत्यक्ष देख रहे, सुन रहे हैं। इनकी पवित्र वाणी का श्रवण कर रहे हैं इन्हीं शब्दों के साथ हीरक जयंती पर यही निवेदन करना चाहता हूँ कि आपका जन्म दिन एक बार नहीं, बार-बार आए, हजार बार आए। आप चिरायु रहें, स्वस्थ रहें, अपनी ध्यान साधना में समस्त समाज के विकारों का शमन करते हुए एक ऐसी रोशनी धार्मिक लोगों को प्रदान करें जो युगों-युगों तक जाने वाली पीढ़ियों को भी दिशा-देशणा देती रहे। इन्हीं शब्दों के साथ आत्मीय वंदन-अभिनंदन ✧✧

चीजों की कीमत.
मिलने से पहले.
होती है और.
इंसानों की कीमत.
खोने के बाद...!!.

हीरक जयंती वर्ष

निर्वैरी-क्षमाशील : जय शिवाचार्य

- प्रवर्तक पू. श्री मुनि प्रकाशमुनि जी म. 'निर्भय'

जैन सन्त परम्परा का एक लम्बा इतिहास है और उसमें भी जैनाचार्यो की उज्ज्वल नक्षत्रावलि का भी अपना विलक्षण प्रकाश रहा है। जैनाचार्यों ने समय-समय पर अनेक नवक्रांति के सूत्रपात भी किये और जिनशासन को प्रभासित किया। वर्तमान समय में ऐसे ही प्रसिद्ध जैनाचार्य का नाम लोक जिह्वा पर सुशोभित हो रहा है - आत्मज्ञानी, ध्यानयोगी-श्रमणसंघ के चतुर्थ पट्टधर **आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.** का।

सरलता सहजता की प्रतिमूर्ति, क्षमाभाव के सुदृढ़ आराधक, वैरभाव से सर्वथा दूर, आत्मध्यान में सर्वदा लीन, समस्त जीवों के प्रति मैत्री भाव से सम्पन्न, गुणीजनों के प्रति प्रमोद भाव रखने वाले, आर्त दुःखियों के लिए जिसके हृदय सरोवर से करूणा निर्झर प्रवाहित हो रहा है और अपने प्रति वैर विरोधी भावना रखने वालो के प्रति भी जो माध्यस्थ भाव से युक्त है, वात्सल्यता के महासागर, प्रसन्नचेता आचार्य श्रीजी की विराटता को शब्दों में समेटना संभव नहीं है।

आचार्यश्रीजी श्रमण संघ के प्रति पूर्णतया समर्पित है। श्रमणसंघ में एकता-अखंडता-परस्पर मैत्री-प्रेम भाव-अपनत्व भाव को आपने निरन्तर आगे बढ़ाया है। श्रमणसंघ की एकता को चिर-स्थायी रुप देने के लिए आपश्री ने जिस विराट भाव और क्षमाभाव को महत्व दिया वह न केवल स्तुत्य है अपितु आदरणीय, आचरणीय भी है। हजार से भी अधिक सन्त-सती समुदाय और लाखों श्रद्धालुओं भक्तों से पूजित होकर भी आप अहं से बहुत दूर लघुतागुण से सम्पन्न है। आपके इसी विशेष गुण से प्रभावित होकर श्रद्धालुजन आपसे जुड़ते चले जा रहे हैं। वह माता धन्य है और वे पिता गौरवशाली है जिसने आप जैसा सुपुत्र पाया। वे गुरु और वह संघ भी धन्य है जिसने आप जैसा शिष्य और आचार्य पाया।

आपके 76वें जीवन बसंत की प्रवेश वेला में मैं यही सद्कामना करता हूँ कि आप युग-युगों तक अपनी आत्म-ध्यान साधना में निरन्तर गति-प्रगति करते हुए श्रमण संघ को जयवंत बनाये रखे और आपके आशीर्वाद से यह संघ सदा फलता-फूलता रहे।

मेरे जीवन का यह सौभाग्य है कि मुझे आपकी हीरक जयंती के पावन वर्ष में आपके पावन सान्निध्य में चातुर्मास करने का अनायास अकल्पित अवसर मिल गया। आचार्य सम्राट एवं युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि म. के पावन सान्निध्य में जीवन का यह प्रथम चातुर्मास आजीवन यादगार रुप स्मृति पटल पर सर्वदा झिलमिलाता रहेगा।

हीरक जयंती वर्ष पावन,
जीवन हीरक सम चमक रहा।
आत्म-ध्यान की निर्मल ज्योति,
आभा मंडल नित दमक रहा।
लक्ष वदन गुण गाथा गा रहे,
कोटी कर, कर रहे अभिवंदना।
युग-युग जीओ!, अमृत बांटो,
करे प्रकाश प्रतिपल अभिनंदना।।

✧✧

अमर हस्ताक्षर...

-उप-प्रवर्तक पू. श्री पंकज मुनि जी म.

जिन शासन की शान, श्रमण संघ के प्राण युग प्रधान पत्र पू. ध्यानयोगी आचार्य सम्राट भगवन् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की हीरक जन्म जयंती पर 'गुरु पद्म' अर शिष्य परिवार। की ओर से हार्दिक-हार्दिक बधाई एवं अनंत-अनंत शुभकामनाएं सादर समर्पित करते हैं।

हमारे लिए सात्विक गौरव का विषय है कि परमादरणीय आचार्य श्री जी के वैराग्य की प्रेरणा में, दीक्षा मंत्र प्रदान में, युवाचार्य पद मनोनयन व आचार्य पद चादर महोत्सव में पूज्य दादा गुरुदेव राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी पू. श्री पदम चन्द्र जी म. एवं वाणी भूषण श्रुताचार्य पू. प्रवर्तक गुरुदेव पू. श्री अमरमुनि जी म. का प्रमुख रुप से योगदान रहा है तथा आचार्य भगवान् के मन में भी आराध्य गुरुद्वय के प्रति श्रद्धा, भक्ति व असीम आस्था का सैलाब मैंने स्वयं देखा है।

आचार्य श्रीजी का बाह्यय व्यक्तित्व जितना चिंताकर्षक है उससे भी अधिक उनका आंतरिक व्यक्तित्व प्रेणादायी है। उनकी नम्रता, भद्रता, मधुरता, सरलता, सहृदयता, अनायास ही हर किसी को अपना बना लेती है। पूज्य आचार्य भगवन् के मन में जो प्राणिमात्र के प्रति दया, करुणा, अनुकम्पा व मैत्री का सागर हिलोरे ले रहा है, वह सच में उन्हें 'भावी तीर्थंकर' के रुप में प्रतिष्ठित करेगा, ऐसी उमंग बार-बार दिल के कोने में उठती है। आचार्य श्री जी का शासन काल जहां अनेकानेक उपलिब्धियों से परिपूर्ण रहा है, वहीं समय-समय पर अनेकों तूफान भी उठते रहे है। लेकिन इन सब स्थिति परिस्थितियों में भी वे सदैव आगे बढ़ते रहे हैं। उनका आत्मबल, पुण्यबल व धर्मबल केवल प्रशंसनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। स्थानकवासी परंपरा में ध्यान को पुर्नजीवित करने हेतु वे सदैव अमर हस्ताक्षर के रूप में याद किए जाएंगे।

इस हीरक जयंती के पावन पर हृदय की गहराईयों से आपके स्वस्थ एवं दीर्घीयुष्य जीवन की मंगलकामनाएँ अर्पित करते हुए वंदन-अभिनंदन!

✧✧

जैन अल्पसंख्यक छात्रों के लिए आवश्यक सूचना

सभी जानते होंगे अभी नूतन विद्यार्थियों के स्कूल/कालेज में प्रवेश प्रक्रिया शुरु हो चुकी है। सभी माता-पिता ध्यान रखें नीचे दिये गये कुछ बातें:-

1. **बच्चे के प्रवेश के वक्त बच्चों का दाखला (एल.सी.) बहुत ज़रुरी है। उसमें बच्चों की सम्पूर्ण महिती होती है।**
2. **सबसे पहले सभी जैन छात्रों के लिये उनके नाम के पहले जैन लगायें नाकि गौत्र।**

उदाहरण : छात्र का नाम - माता और पिता के नाम 'जैन' शब्द जुड़ा होना चाहिए।

- डॉ. प्रो. अशोककुमार एन. पगारिया जैन

शिव सूर्य को कोटि-कोटि नमन

- पू. वरुण मुनि जी म. 'अमर शिष्य'

तप और ध्यान, ध्यान और तप जिस साधक की जीवन-धरा पर एक साथ साकार होते हैं, वह साधक शीघ्र ही अपने चरम-परम लक्ष्य को हस्तगत कर लेता है। आज पंचम काल में भी जिस महासाधक की जीवन धरा परा तप और ध्यान की गंगा-यमुना पूरे वेग से कल-कल, छल-छल करती हुई पल-पल लोक मंगल हेतु प्रवाहित हो रही है, उनसे पूरा युग सहज ही परिचित है। वे महासाधक हैं- जैन धर्म दिवाकर, युगपुरुष आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी महाराज। मेरे लिये यह सात्विक गौरव का विषय है कि गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म. ने आपश्री को दीक्षा-पाठ पढ़ाया और मेरे आराध्य गुरुदेव वाणीभूषण प्रवर्तक श्री अमरमुनि जी म. ने आपको श्रमण वेष धारण करवाया। भविष्य में पूज्य पद्म गुरुदेव के प्रवर्तक पद चादर महोत्सव के पावन प्रसंग जब लगभग 250संत-साध्वियाँ उपस्थित थे, उस समय गुरु आत्म परिवार एवं समस्त उत्तर भारत की ओर से श्रद्धेय गुरुद्वय ने आपश्री जी का नाम 'युवाचार्य' पद हेतु पूज्य आचार्य आनंद भगवन् की सेवा में प्रेषित किया। जिस समय आपश्री जी का आचार्य पद चादर समारोह आयोजित होना था, उस समय भी बड़े-बड़े क्षेत्रों व श्रीसंघों की पुरजोर विनंतियाँ चल रही थीं परंतु जैसे ही श्रद्धेय गुरुदय का पत्र आपश्री जी के करकमलों तक पहुंचा वैसे ही आपश्री जी ने समस्त विनंतियों को दर-किनार करते हुए फ़रमाया 'मेरे दीक्षा प्रदाता आराध्यय प्रवर्तक गुरुदेव ने मझे याद फरमाया है। वे आने में असमर्थ हैं। अतः चादर महोत्सव उन्हीं के पावन सान्निध्य में ऋषभ विहार, दिल्ली में आयोजित किया जाए। वर्ष 2012में भी जब आपश्री जी को ज्ञात हुआ कि वाणी भूषण पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव जी म. अस्वस्थ हैं तथा सप्ताह में तीन बार उनका डायलिसिस चल रहा है तो आपश्री अपने सभी प्रोग्राम रद्द कर दिल्ली से लगभग 300-400की विहार यात्रा तय करते हुए चातुर्मास हेतु सिविल लाईन, लुधियाना (पंजाब) पधारे।

यूं तो उस चातुर्मास की बहुत सी स्मृतियाँ हैं परंतु यहां केवल एक संकेत मात्र करना चाहूंगा आराध्य गुरुदेव की अस्वस्थता के समय मुझे उनकी सेवा का थोड़ा बहुत जो सौभाग्य प्राप्त हुआ वह मेरे जीवन की अनमोल पूंजी (अक्षय निधि) है। अक्सर तीनों समय गुरुदेव गौचरी, औषधि आदि ग्रहण कराने का परम सौभाग्य मुझे ही प्रदान करते थे। यह उनकी अनंत कृपा थी मुझ नाचीज़ पर और मेरा परम सौभाग्य।

हर रोज की तरह सुबह मैं गुरुदेव श्री को जब नवकारसी (नाश्ता) करवा रहा था तब अचानक पूज्य शिवाचार्य भगवन्, मंत्री जी एवं सहमंत्री श्री शुभम मुनि जी म. के साथ प्रातः वंदन हेतु पधारे। उन्होंने जब यह दृश्य देखा तो मेरे हाथ से पातरी ली और बोले वरण मुनि जी! आज तो रोज ये सौभाग्य प्राप्त करते हो।

लाओ आज यह सेवा करने का अवसर मुझे दो और आचार्य भगवान् गुरुदेव के समीप ही पाटे पर विराजित हो गए व अपने हाथों से गुरुदेव का आहार करवाने लगे।। यह दृश्य देख हम सब की आँखें नम हो गई और गुरुदेव का हृदय भी प्रमोद भाव से भर गया। धन्रू हैं ऐसी सरलता, ऐसी मधुरता और ऐसी नम्रता...!

श्रद्धेय शिवाचार्य श्री का स्वभाव नवनीत सा मृदु है। अनुशासन और आत्मानुशासन चट्टान सा सुदृढ़ है। श्रद्धेय शिवाचार्य श्री एक युगपुरुष हैं, युगप्रधान आचार्य सम्राट हैं। युग को एक नई दृष्टि, नया दर्शन और नया चिंतन देने वाले युगस्रष्टा महापुरुष हैं। आपके हीरक जयंती पुण्य पर्व पर भारतवर्ष में साधनात्मक और सृजनात्क सहस्रो उपक्रम चल रहे हैं।

पूज्य शिव प्रभो! आपका तप अनुकरणीय है। आपकी ध्यान साधना अभिनंदनीय है। आपके जीवन का एक-एक पल जन-कल्याण में समर्पित है। हीरक जन्म-जयंती पर पूज्य शिव प्रभो! आपके चरणों में कोटि-कोटि नमन्!

✧✧

साधना के शिखर पुरुष - आचार्य भगवन्

- पू. साध्वी श्री सुप्रभा जी म. 'सुमन'

हमारा भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है। यह मोक्ष का केन्द्र बिन्दु है। यहीं से अनेको ही भव्य आत्माओं ने आत्म साधना की आराधना कर तिण्णाणं तारयाणं की उक्ति को सार्थक किया। इस देश के ऋषि मुनियों ने, विचारशील चिन्तकों ने समय-समय पर 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्मः' का उद्घोष कर स्व-पर का कल्याण किया और अपने अन्तिम लक्ष्य निर्वाण को प्राप्त किया। उनकी चिन्तन शक्ति जीवन-निर्माण कला, ज्ञान-गरिमा की लौ अद्भुत एवं आश्चर्यजनक थी। उनकी योगिक साधना की शक्ति का लोहा आज भी विश्व मानता है।

आज मैं उन महान ज्योर्तिधर, सत्य क्रान्ति के प्रकाश पुंज आलौकिक महापुरुष के विषय में कुछ लिखने जा रही हूं जिनकी यष-कीर्ति सर्वत्र फैली हुई है, जिनके ज्ञान की सर्चलाइट जन-जन को राह दिखला रही है। जिन्होंने जीवानोत्थान का सीधा स्वच्छ मार्ग बता कर संसार का कल्याण किया है। वे हैं मेरे मन मन्दिर के देव, जिन शासन की शान, श्रमण संघ के प्राण, युग प्रधान परम पूज्य ध्यान योगी आचार्य भगवान डॉ. श्री शिव मुनि जी म. जिनका कि सकल जैन समाज हीरक जन्म जयंती वर्ष बड़े हर्षोल्लास के साथ मना रहा हैं।

आपका अवतरण पंजाब प्रानत में मलोट मण्डी की पावन धरा पर भाग्यशाली क्षणों में पिता श्री चिंरजीलाल जी की धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती विद्या देवी जी की पुण्यशालिनी कुक्षी से हुआ। और यह बालक आगे चलकर न केवल मलोट का ही अपितु सम्पूर्ण मानवता का पथ-प्रदर्शक एवं संघनायक बना। आचार्य भगवान ने तीस वर्ष की भरपूर यौवनावस्था में जब व्यक्ति का मन सासांरिक चकाचौंध में आसक्त होता है उस समय सांसारिक नश्वरता को जान कर कठिन राह पर कदम रखा। जहां बड़े-बड़े सुमह आते ही डोल जाते है, वह है भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट साधना-पथ की राह जो आत्मा को महात्मा और महात्मा को परमात्मा बना देती है।

संयम पथ पर कदम रखते ही आगम शास्त्रों के अध्ययन की ओर अपने मन कोलगा दिया। अहर्निश आत्म साधना में रमण करने लगे।

पुण्य की प्रबलता देखिए आपकी हृदय की सरलता, वाणी की मधुरंता, चारित्र की उज्जवलता, शरीर की कमनीयता एवं प्रकाण्ड विद्वता ने सभी के हृदयों को अपनी ओर आकर्शित किया और सभी ने एक स्वर से आपको ही अपना प्राधनाचार्य घोशित किया। अतः जैन समाज के सर्वोच्च धर्मानुशास्ता पद के गुरुतम दायित्व को संयम एवं साहस के साथ वहन करते हुए आप श्रमण संघ को गौरवान्वित कर रहे हैं।

एक ओर आप जहां संघ का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर तीर्थंकर भगवन्तों की महान साधना एवं भेद विज्ञान की महान साधना के द्वारा जगत का कल्याण कर रहे हैं। सौभाग्य की बात है कि वर्तमान में हजारों साधु-साध्वियाँ भी इस मंगल अनुष्ठान की साधना में सलंग्न हैं।

यह आचार्य भगवान की महान करुणा है कि उन्हें जो उपलब्ध हुआ है वे उसे जन-जन तक पहुंचा रहे हैं अनंत उपकार है यह आचार्य देव का। ऐसें आचार्य देव को पाकर हम धन्य-धन्य हो रहे हैं।

आज हम और आप आचार्य भगवान की जन्म हीरक जयंती मना रहे हैं किन्तु हमें उनके पावन मार्ग पर चलने की परमावश्यकता है। उनका जीवन और उनके उपदेश हमारे लिए मार्गदर्शन देने वाले हैं।

जन्म हीरक जयंती के शुभ अवसर पर अपने हृदय की अनन्य आस्था के साथ हम आपके सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगलकामना करते हैं। आपके यशस्वी-मनस्वी वीतरागी स्वरुप की छत्रछाया हमें अनवरत प्राप्त होती रहें और श्रमण संघ ही क्या सम्पूर्ण जैन समाज आपके कुषल निर्देषन में आगे ही आगे बढता रहें। यही हम वीतराग प्रभु से कामना करते हैं। हीरक जन्म जयंती पर वन्दन सहित मेरा कोटि-कोटि अभिनन्दन। पुनः पुनः हार्दिक वर्धपन।

✧✧

आत्म-ध्यान-साधना-सफलता की कुंजी है

- गुरू आनंद शिष्या पू. श्री कंचनकंवर जी म.

"हर फूल में खुशबू होती है,
मगर गुलाब जैसी नहीं,
संत तो सभी महान् है,
लेकिन शिवाचार्य जैसे नहीं।।"

इस धरातल पर अस्तित्व सभी का होता हे, किंतु व्यक्तित्व विरलों का ही होता है, क्योंकि अस्तित्व सहज में प्राप्त हो जाता है। लेकिन व्यक्तित्व निर्मित करना पड़ता है। "उद्यम, साहस, धैर्य-शान्ति-बुद्धि और पराक्रम इन छः से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। विशेष-विशेष रुपेण व्यक्तित्व निखरा है। ध्यानयोगी आत्मज्ञानी, तपपूंज, वर्तमान आचार्य डॉ. प.पू. श्री शिवमुनि जी म. का,

एक स्वप्न! शिवाचार्य जी ने जिसे रेखा, एक शुभ संकल्प! ओ शिवाचार्यश्री जी के मानस में उभरा, एक दीपक। जिसे शिवाचार्य श्री जी ने प्रज्वलित किया है, एक मंजिल! जिस ओर शिवााचार्य श्रीजी के चरण निरंतर रुपेण बढ़े हैं। वह स्वप्न है, आत्म ध्यान की साधना का, शुभ संकल्प है-आत्मध्यान का, वह दीपक है, वह मंजिल है और वह लक्ष्य है आत्मध्यान साधना का! उसे पाने के लिए आचार्य धिावमुनि जी म. ने संघर्ष का रास्ता चुना है। कई विकट प्रसंगो का मुकाबला किया है और प्रतिकूलता के हर समीर को सहा है, आत्मध्यान की साधना हेतु!

डॉ. आचार्य पू. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने कष्ट के लिए कष्ट नहीं सहे, अपितु ध्यान साधना को उद्देश्यों की सफलता के लिए सब कुछ सहा, किसी से नहीं कहा,

"कितना सरल व्यवहार है आपश्री का,
कितने निर्मल उज्जवल है भाव,
मंगलकारी दर्शन है आपश्री के,
"ध्यान साधना" का है सारा प्रभाव"

आपश्री के व्यक्तित्व में दिव्यता के दर्शन होते है, चूंकि आपश्री का व्यक्त्वि बड़ा ही अजीब का है, ध्यान की प्रधानता, प्रमुखता में व्यक्त्वि निर्माण की क्षमता बढ़ती है। पू. श्री डॉ. आचार्य शिवमुनि जी म. सा. का अमृतमय व्यक्तित्व के धनी है। अतः साधना के पथपर निरतंरता से बढ़कर ध्यानयोग के द्वारा विषमता के विष को पचाकर जीवन को अमर बनाया है। महान् बनाया है। ध्यान की विशिष्ट सुदीर्घ साधना से महापुरुष की श्रेणी पायी है, इसी वजह आपश्री का शुक्ल एवं तेजस्वी आभामंडल है। जो जन-जन को प्रभावित कर रहा है। ध्यान के माध्यम से शिवाचार्य भगवन् स्वानुभूति का परम रस चख रहे हैं एवं सभी को परम रस चने की सम्प्रेरणाएं प्रदान कर रहे हैं।

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर प.पू. श्री आचार्य शिवमुनि जी म.सा. ने महावीर की ध्यान साधना का बिगुल बजा रहे है। आपश्री का आल्हादित करने वाला पावन वरदहस्त हम सभी पर सदैव-सदैव बना रहे, आपश्री स्वस्थता के साथ सुदीर्घता हासिल कर चिरायु, शतायु और सहस्त्रायु बने, आपश्री के हीरक जन्मोत्सव के मंगलमय प्रसंग पर साध्वी ठाणा-6 की ओर से शत-शत वंदन! हमारों बार अभिनंदन! और लाखों बार अभिवंदन।

✧✧

आत्मय वंदन अभिनंदन

- प्रवर्तिनी पू. डॉ. सुप्रभा जी म. 'सुधा'

अनंत आकाश में सूर्य, चन्द्र, सितारे एवं राहु इत्यादि ग्रह भ्रमण करते हैं। सूर्य और चन्द्र स्वयं भी चमकते और अन्य को भी प्रकाशित करते हैं। सितारे स्वयं तो चमकते हैं, झिलमिलाते हैं, किन्तु अन्य को प्रकाशित करने की क्षमता नहीं रखते हैं, राहु वह तो स्वयं भी अंधकारमय है और अन्य ग्रहों को यहां तक कि सूर्य और चन्द्र को भी मलिन कर देता है। इस धरा पर मानव भी तीन प्रकार के हैं। प्रथम - जो स्वयं तिरे एवं दूसरों को भी तारे वे महापुरुष सर्यू और चन्द्र की भाँति हैं। दूसरे में जो मानव स्व्यं तो सत्यनिष्ठ एवं सच्चरित्री हैं किन्तु अन्य को मार्ग दर्शन देने में समर्थ नहीं हैं, फिर भी वे धन्य हैं, उनका जीवन सितारों की तरह है। कुछ मानव राहु की भाँति होते हैं, जो स्वयं भी गिरते हैं और दूसरों को भी गिराते हैं।

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर तप सूर्य राष्ट्र संत ध्यान योगी आचार्य भगवन श्री शिवमुनि जी म. सूर्य की तरह नहीं चन्द्र के समान हैं। सूर्य स्वयं तो चमकता है अपना उज्जवल प्रकाश सम्पूर्ण विश्व में फैलाना चाहता है परंतु छोटे-मोटे अन्य ग्रह-उपग्रहों को प्रकाश उसे सहन नहीं होता है। वह चाहता है मेरे राज्य में मेरे अतिरिक्त अन्य कोई भी नक्षत्र नहीं चमके। इसके विपरीत चन्द्रमा स्वयं भी चमकता है और अन्य स्नेह -साथियों को भी चमकने का अवसर प्रदान करता है।

चतुर्विध संघ में आचार्य का सर्वाधिक महत्त्व है। धर्म संघ की बागडोर आचार्य के हाथों में होती है। सही अर्थ में आचार्य तीर्थंकर का उत्तराधिकारी होता है। पंचमकाल में अरिहंत तो हें नहीं, इसलिये यदि आचार्य को वर्तमान समय का तीर्थंकर भी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। अध्यात्म जगत के कलाकार स्वयं भगवान महावीन ने कहा कि जब तीर्थंकर नहीं रहेंगे तब भव्य आत्मा आचार्य भगवन. के दर्शन लाभ एवं प्रवचन पीयूष का रसपान कर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकेगी। अतः आज आवश्यकता है - सम्यक श्रद्धा के साथ आज्ञा और अनुशासन की। आज्ञा और अनुशासन का पालन करेंगे तभी आचार्य भगवन ने जो घोषणाएं की है, और नये-नये आयाम स्थापित करने की सोच रहे हैं, वे सभी सफल हो सकेगी।

श्रुत, शील और बुद्धि से सम्पन्न आचार्य संघ के अज्ञान - अंधकार को नष्ट कर मणि की तरह चमकते हैं, और देवों में जिस प्रकार इन्द्र शोभायमान होता है, उसी आचार्य श्रमण-श्रमणी वृंद में सुशोभित होते हैं। कहा भी है **'एवायरिआये सुयशील -बुद्धिए रिवायई सुर मज्झेव इन्दो।।** - मुरुधर गुरुदेव

आचार्य भगवन का बहिरंग व्यक्तित्व जितना लुभावना - सुहावना है, उससे भी कहीं अधिक गहरा और रहस्यमयी है - अंतर व्यक्तित्व। आप सहज सरल हैं, कहीं भी, कभी भी और कैसे भी मिलें - ये सर्वथा अकृत्रिम ही मिलेंगे। वहीं हंसता-मुस्कराता चेहरा, वहीं सीधी-साफ बात। सर्वप्रथम सन् 1984इंदौर-जानकी नगर में चिन्मया राधिका राजगुरु माता पू. श्री उमराव कुंवर जी म. 'अर्चना' के सान्निध्य में आचार्य भगवन के प्रथम दर्शन पर धन्यता की अनुभूति की। तत्पश्चात् 2015में वृहद साधु-साध्वी सम्मेलन के दौरान उज्जैन एवं इंदौर में आचार्य श्री की सेवा में बैठने एवं

बातचीत करने का अचिन्तय लाभ मिला और मैंने अनुभव किया कि आपका जीवन पारदर्शी है जिसमें किसी प्रकार का मालिन्य नहीं है। आगम की उक्ति को अक्षरशः चरितार्थ किया है - जहां अंतो तहा बाह्य।

आपश्री धर्म संघ के सर्वोच्च पद पर समासीन होने पर भी सदैव प्रसन्नचित ही रहते हैं। आपकी प्रमुदित प्रसन्न मुख-मुद्रा का अगर कोई रहस्य है तो यह है कि आपकी उत्कृष्ट ध्यान साधना। परमात्मा महावीर की साधना को वास्तव में आपने आत्मसात किया है। हमारा परम सौभाग्य है कि इस सदी में आप जैसे ध्यान योगी तपो तपस्वी, प्रतिमा पुरुष, प्रज्ञामहर्षि आचार्य श्री की धनी भूत छत्रछाया प्राप्त हुई। है ऐसे स्नेह सौहार्द के विराट महाछत्र की छाया हम पर युग युगांतर तक, वर्षानुवर्ष तक बनी रहे। मैं इस अभिनंदन की बेला पर आपश्री के इस प्रकाशमय जीवन का स्वागत करती हूँ।

सदा सर्वदा आपश्री जी के चरण प्रत्येक, प्राणी को आत्म कल्याण की प्रेरणा देते रहे। आपश्री के दिशा-निर्देशन से श्रमण संघ की शोभा में अविराम वृद्धि होती रहे, आपकी ओजस्विता एवं तेजस्विता से संघ सदैव अवलौकित होता रहे, सफलता की नई बुलंदियों को संस्पर्शित करता रहे। आपके सत्पुरुषार्थी से संघ में प्रेम एवं स्नेह का प्रसार होता रहे। आप श्रमण संघ को समुन्नत करते रहे। इसी मंगल-मनीषा व हार्दिक वंदना के मंगल स्वर के साथ आप श्री के हीरक जन्मोत्सव पर आपको वंदन, अभिवंदन, प्रतिवंदन, अंतहीन वंदन। आप स्वस्थ, प्रसन्न दीर्घायु बनें। हमारा सोच आपश्री के प्रति समर्पण श्रद्धा के साथ समर्पित।

।। आत्म ज्ञान का दीप ।।

हे आत्म दृष्टा! हे पुण्य पुँज करती हूँ शत-शत सत्कार।
हीरक जयंती की शुभबेला पर, अर्पण करूं में क्या उपहार।।
मेरे अंतर मन के भावों को गुरुवर, करना हृदय से स्वीकार।
कृपा नीर बहा दो गुरुवर, खोलो अंतर मन के तार।
वरद हस्त रहे सदा आपका, बरसे कृपा की अमृत धार।
चरण सान्निधी पाकर गुरुवर, जीवन में आया अभिनव निखार।।
भक्त तुम्हारे लाखों गुरुवर, खड़ी हूँ मैं भी चरणार।
संयम का ये उपवन महका दो, विनती करती हूँ करतार।।
शुभकामना है शुभकामना है, जयवंत रहे श्रमण संघ के खेवनहार।
आपकी छत्र-छाया से चतुर्विध संघ को, मिलती रहे खुशियाँ अपार।
जियो गुरुवर बरस हजार, अंतर्दिल के हैं ये उदगार।
आपकी चरण शरण को पाकर, जीवन में आती रहे बहार।
ज्ञाता दृष्टा भावों में रहकर, किया आत्म ज्ञान का दीप उजागर
अंतर ध्यान की ज्योति जलाकर, कर दो मेरा भी उद्धार। ✧✧

पूज्य आचार्य भगवंत की हीरक जयंती पर मेरे उद्‌गार

- पू. श्री डॉ. आदर्श ज्योति म.

संत अर्थात मानवता का सर्वोत्तम स्वरुप, संत का अस्तित्व और व्यक्तित्व सम्पूर्ण विश्व स्वीकारता है, हर जाति धर्म संप्रदाय में संतों को सर्वोपरि सम्मान दिया गया है। साधु, फकीर, संन्यासी, ओलिया, फ़ादर ये सब संत के ही पर्याय हैं, तप, त्याग, संयम और साधना में इनके जीवन की सार्थकता होती है।

संत अनंत का यात्री होती है, इसीलिए हमारे देश में शासक से अधिक सम्मान साधक का होता है, अपितु शासक भी साधक के चरणों में नतमस्तक होता है, दोनों में मौलिक अंतर है एक भौतिक सम्पदा का स्वामी है तो दूसरा आत्म वैभव का अधिकारी है, एक साधन से परिपूर्ण है तो दूसरा साधना से समृद्ध है। संत जागरण और आचरण की प्रेरणा है, संत सूरज के अंतस्तल में बिखरे अंधकार को मिटाता है, संत सायरन कर्त्तव्य स्मृति करवाते हैं, संत अंतज्योति जगाने का शंखनाद करते हैं, संत सेंट के समान हैं, जिसकी सुगंध पर सबका अधिकार होता है।

जैसे मेघ चुन-चुन घरों में नहीं बरसता, चाँदनी चयन कर चौराहों पर नहीं धमकती, वह पथ भूले पथिक का मार्गदर्शन करते है। संत सतगुण और सद्‌गति का इंडिकेटर है, सदाचरण की प्रतिमूर्ति है, वह सामाजिक, धार्मिक विरासत के संरक्षक एवं मर्यादित जीवन पद्धति के शिक्षक है, प्रवर्धमान पवित्र विचार शैली के पुरोधा और संवाहक है। संतों की पावन धरा होने के कारण ही भारत समग्र विश्व में सम्मानीय और विश्वगुरु के ताज का हकदार बन सका था। समाज जब जब संतों की अपेक्षा करता है तब तब सामाजिक, धार्मिक और व्यावहारिक व्यवस्थाएं विकलांग और पंगु हो जाया करती हैं। संतों के निर्देश उपदेश में जीवन का निचोड़ होता है, वे भाग्य विधाता, राष्ट्र निर्माता और समाज के कर्णधार होते हैं, उनकी क्षमता धरती पर स्वर्ग उतारने की होती है, वे मान जाति की सर्वश्रेष्ठ पूँजी, धरोहर और नियामत होते हैं। संतों की बदौलत राष्ट्र का चरित्र निर्माण होता वे सुशुप्त चेतना को चेतावनी देते हैं, युगो-युगों को त्राण देता महाप्रतीक हैं, उनके भीतर का रचनाकार जब उजागर होता है तो भीतर का युगपुरुष अंगड़ाई से लेता है, वह समय का आश्वासन बन जाता है, क्रमशः विविध कालजयी प्रयोग कालजयी प्रयोग करता हुआ अंततः साधना में मौन हो जाता है और शताब्दियाँ उसके बोल बोलती हैं, संतों की अनंत की सृजनता का अंत, कभी नहीं होता, वह अमर होती है।

'आत्मध्यान-अन्वेषक' पूज्य श्री के जीवन का पर्याय है, सरलता, सहजता, सजगता, स्पष्टता, कोमलता, मधुरता, उदारता और तेजस्विता। ये सारे गुण आपमें जीवन रुप में विद्‌यमान हैं, वर्धमान है और यही कारण है कि पिपासु साधक भेदजान की तीव्रतम प्यास लिए आपके पास खिंचा चला आता है उसकी आस और प्यास को बड़े प्रयास पुरुषार्थ और वात्सल्य से प्रशांत करते है खाली घट जब इस पनघट पर आकर संतृप्त सराबोर होकर अपने खाली घट को भरकर वापसी करता है तो अपने आपको पुराने आवरण से पुरानी धारणा मान्यता, परम्परा, आम्नाय से ऊंचा उठा हुआ पाता है। जीवन का एक परिपूर्ण परिवर्तन के साथ नयापन, हल्कापन लेकर लौटता है।। यह सुना हुआ नहीं अनुभूत सत्य है।

भगवान महावीर की साधनाको आपने - अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से देश के कोने-कोने में ही नहीं अपितु विदेश की धरती पर पहुंचा दिया है। आत्मध्यान-साधना को इतना इतना सहज, सरल, सुपाच्य, सुगम बना दिया कि आपके इस "आत्मध्यान-साधना शिविर" के रंग में प्रबुद्ध जन, उद्योगपति, डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर तो रंगे ही हैं, सामान्य शिक्षित, अनपढ़, प्रौढ़ और वृद्ध भी उसी उमंग उत्साह और लगन में लाभ ले रहे हैं। साधक सदैव उत्कृष्टता का अनुरागी होता है। अतः उसकी हर हरकत कर क्रिया से आदर्श की स्थापना होती चली जाती है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' का उदार सोच से समृद्ध पूज्यवर कभ्भी संकुचितता के सांचे में नहीं सिकुड़ते और यही कारण है कि आप अनेक आम्नाय संप्रदाय द्वारा भी प्रशंसनीय, सम्मानीय और लोकमान्य शिवंकर शंभुकर हुए हैं। उल्लेखनीय है कि इतर आम्नायी या इतर जैनी भी जब करीब जाता है तो बरबस। कितने बड़े आचार्य कितने सरल सहज निरभिमानी और वात्सल्य नितरती वाणी से प्रभावित होकर आपसे विलग होते ही 'वाह-वाह' कहे बगैर नहीं रहता, जिससे एक सात्विक और प्रशस्त गौरव की अनुभूति के साथ एक सहज प्रेरण मिलती है कि हमें भी इनकी सहजता सरलता, लघुता और वात्सल्य की अनुगामी बनना चाहिए। 'कहां आप, कहां हम' चिंतन की प्रक्रिया प्रारंभ होकर प्रेरणा के बीज़ बो ही जाती है।

अंतरपथ के महायात्री संघरथ के समर्थ सारथ्भी अनंत संभावनाओं के मालिक आचार्यश्रीजी ने अपनी असीम आस्था, प्रखरप्रज्ञा और प्रबल पुरुषार्थ के राजमार्ग पर चलकर बीज़ फिर अंकुर, पौधा, वृक्ष और महावृक्ष की महायात्रा तयकर विकास की ऊंचाईयों को छूते हुए आज संत-सम्राट के पद पर आसीन हैं। 'आत्मदृष्टि' की अनुपम सम्पदा को ले 'ध्यान' के अमृत को जन-जन में बांटते हुए नगर-नगर, डगर-डगर में 'मैं जागा तुम भी जागो, मैंने पाया, तुम भी पा लो' की अलख जगा रहे हैं।

वसुधा के वैभव आपश्री का जीवन मानव समाज के एक ज्योतिर्मय नक्षत्र हैं, ज्ञानदर्शन और चारित्र का त्रिवेणी संगम आपका व्यक्तित्व है। आपका सान्निध्य पुनीत तीर्थ है। उठती हुई नजरें आशीष वर्षा करती हैं, तो झुकती हुई नजरें करुणा का निर्झर बहाती हैं और अस्तित्व को प्रेम क्षमा और वात्सल्य का वरदान देती हैं। मुस्कान में मासूमियत भी है तो निर्णय में लोहपुरुष जैसी कठोरता भी है, परपीड़ा से पीड़ित भी होते हैं, तो दुखियों को देख द्रवित भी, संयम, नियम के प्रति दृढ़ता है तो चिंतन में प्रौढ़ता भी। आप तपस्वी, मनस्वी, उर्जस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी महर्षि हैं। स्वस्थ समाज निर्माण, नैतिक चेतना का उत्थान चिंत का उर्ध्वारोहण, जीवन का रूपांतरण शुद्ध और पवित्र आचरण के साथ-साथ 'मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं' इसेअपने रोएं-रोएं अथवा खून के हर कतरे में निमज्जित करने वाले महायोगी हैं। केवल्य प्राप्ति उपरांत भगवान महावीर की सर्वकर्म विनिमुक्ति निश्चित थी तथापि संसारी जीवों के प्रति उनकी उफनती, उभरती रुणा ही कारण थी कि जो अमृत मैंने चखा है, मुझे जो अमूल्य सम्पदा समृद्धि उपलब्ध हुई है वह अन्यों को भी बांटू ताकि सबका भला हो, सबका कल्याण हो, शुभ हो, मंगल हो और सभी अपने मानव जीवन की सार्थकता पर अपने हस्ताक्षर कर सकें।

'आमसाधना द्वारा आत्मोत्थान यही प्रमुख लक्ष है, आपका और अपनी उदात कल्याणी सोच से प्रकृति को संस्कृति से अलंकृत करना चाहते हैं। श्रमण आकाश के आभावान नक्षत्र एक महामनिषी प्रखरचेता महासंत हैं, आप एक व्यक्ति नहीं एक महाशक्ति हैं, व्यक्ति का अभिनंदन और स्वागत होता है, शक्ति की

तो उपासना आराधना पूजा होती है, आपके भीतर शक्ति का अजस्त्र स्तोत्र प्रवाहित होता है। उसकी अभिवंदना है, मैं पूज्य श्री में अकेली व्यक्तिमतता कैसे स्वीकार करूं? जबकि आप 'वन मेन ब्रिगेड' हैं। आपके भीतर पूरी समष्टि विद्यमान है। आपके पास व्यक्ति की दृष्टि नहीं सम्पूर्ण मानवीय दृष्टि है।

आप उस ध्रुव तारे के समान है जो अंधेरे में भटकते, भटके-भूले हुए पथिक को राह दिखाते हैं। इन्द्रपुरी 'इंदौर' महानगर का सौभाग्य सूर्य उदय हुआ जो पुण्यवानी के प्रभाव से यहां के 'अभय-प्रशाल' के प्रांगण में प्रावस के 125वें दिवसीय पीयूष वर्षिणी बरसेगी और महाभाग्यशाली भव्यात्मा ही इस अखण्ड सौभाग्य को सम्प्राप्त कर सकेगी।

हीरक जन्मोत्सव हमारा जागरणोत्सव बने ऐसी हमाररी हृदय की गहराई से मनोमंशा तथा हार्दिक हार्दिक बधाईयाँ।

न शोहरत पे नाज़ करते हैं,
न मेहनत पे नाज़ करते हैं।
श्रमण संघ को मिला है एक मसीहा
इसलिए हम तो अपनी किस्मत पे नाज़ करते हैं।
अभिनंदन अंधकार का नहीं, प्रकाश का होता है,
अभिनंदन पतझड़ का नहीं, मधुमास का होता है
ज्ञानियों ने अपने अनुभव से ये बताया है, अभिनंदन
जड़ वस्तुओं का नहीं, गुण विकास का होता है।
जन्म जयंती महापुरुषों की हमें, यह सीख सिखाती है,
उन जैसा जीवन जीएं, ये संदेश सुनाती है।।

✧✧

चातुर्मास सूची संबंधित सूचनाएं ...

नारनौल (हरियाणा)

स्पष्ट वक्ता, दृढ़ संयमी लोह पुरुष, संथारा विशेषज्ञ, पूज्य गुरुदेव श्री धर्ममुनि जी म., पू. श्री चैतन्य मुनि जी म., पू. श्री चिराग मुनि जी म., पू. श्री चन्द्रेश मुनि जी म., पू. श्री केशव मुनि जी म. आदि ठाणा
चातुर्मास स्थल : - श्री एस. एस. जैन महासभा, माणक चौक, नारनौल - 123 001, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
अध्यक्ष : मनोज जैन : 09416347286,मंत्री : मुकेश जैन : 09992288518, 7015976801

वर्धमान प्रतिष्ठान, पुणे (महाराष्ट्र)

आगमवेता महासाध्वी पू. श्री वैभवश्री जी म. 'आत्मा', पू. साध्वी श्री देशनाश्री जी म., पू. साध्वी श्री चरमश्री जी म., पू. साध्वी श्री नियागश्री जी म. आदि ठाणा
चातुर्मास स्थल : - वर्धमान प्रतिष्ठान, शिवाजी नगर पुणे
सेनापती बापट रोड़, हनुमान नगर, रत्ना हॉस्पीटल के सामने
शिवाजीनगर, पुणे - 411016 (महाराष्ट्र), अध्यक्ष : विलास राठौड़ जैन : 09890174007, 08805047007

अहमदाबाद (गुजरात)

श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री प्रदीप मुनि जी म., उप-प्रवर्तक पू. डॉ. श्री सुभाष मुनि जी म. 'सुमन', तपस्वी पू. श्री धीरज मुनि जी म. आदि ठाणा
चातुर्मास स्थल : - कांकरिया जैन भवन, श्याम सुंदर सोसायटी, संवेद फ्लैट के सामने, भैरवनाथ रोड़
मणिनगर, अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)
महावीरचंद नाहटा जैन : 090161 84340

शिवाचार्य चरण में....

- पू. डॉ. श्री विजयश्री जी म. 'आर्या'

मेरा घर सिद्धालय हैं, मैं सिद्धालय का वासी हूं... यही अंतर गूंज हैं, प्रतिपल प्रतिक्षण, ध्यानालोक में विचरण करने वाले अध्यात्म दृष्टा परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि म. की। आचार्य श्री का तप,पत, जीवन वर्तमान युग में एक प्रकाश स्तम्भ है। आपश्री ने भारतीय संस्कृति के गौरवशाली इतिहास में ध्यान-साधना के द्वारा सत्य,अहिंसा, करुणा, मैत्री एवं त्याग का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्तमान युग में आपश्री प्राचीन साधना परम्परा के नये साधक तथा संयम और तप के अप्रतीम प्रतीक हैं। यद्यपि आप स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के एक विशाल संघ के अधिपति हैं किन्तु आपका महनीय व्यक्तित्व किसी सम्प्रदाय विशेष में आबाद्ध नहीं हैं। विश्वशांति एवं जन-कल्याण के लिये आत्म ध्यान के जिस मार्ग की आपने खोज की है उससे सभी जाति वे पंथ के लोग उपकृत हुए हैं हो रहे हैं। वस्तुतः आप राष्ट्र की ध ार्मिक एवं आध्यात्मिक धरोहर हैं?

75वर्ष पूर्व धरती पर आपश्री का अवतरण निश्चय ही परिवार, समाज, देश व राष्ट्र की उत्क्रांति का संदेश देने हेतु हुआ था, आपश्री का जन्म देश व धर्म के भाग्योदय का गर्भकाल कहा जा सकता है। जिसको अपनी लयवृद्धि के साथ-साथ साधना की अनेकानेक उपलब्धियों को हासिल कर वटवृक्ष का रुप प्रदान किया। साधना की सीढ़ियों पर कदम दर कदम आगे बढ़ता हुआ आज वह जीवन गुण रुपी मेरुगिरि के पंडक शिखर पर आरुढ़ हुआ दृष्टि गोचर हो रहा है। उसका प्रबल प्रमाण है - इंदौर के अभय प्रशाल मैदान में हजारों की संख्या में प्रतिक्रमण। सहस्रो चक्षुओं द्वारा यह दृश्य आश्चर्य और अभूतपूर्व वर्णित किया गया। आपश्री की शांत-प्रशांत निर्मल छत्र-छाया में जिसने भी आत्यालोचना की वही धन्य-धन्य हो गये। उसने अपने अंतर के कल्मष धोकर हल्कापन अनुभव किया। प्रभु बनने की चाह वालों को प्रभु बनने का मार्ग मिल गया। कितना अलौकिक अद्‌भुत नजारा होगा वह।

हे शिवस्वरुप भगवन! आत्मनिरीक्षण एवं आत्मप्रक्षालन करके अपनी आत्मा को शुचिभूत करने वाले साधकों की विश्व रिकार्ड भीड़ को चक्षु पथ पर उतारकर भी आप निर्लिप्त बने रहे, न कहीं अहं का स्पर्श हुआ, न मोह माया आशक्ति का। आपश्री की साक्षीभूत आत्मा को मेरा त्रिकाल वंदन है।

आत्मध्यान का अनुपम पाथेय निःस्वार्थ भाव से सभी को बांटने वाले हे महादानी! आपकी निश्राय में आश्रय प्राप्त कर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती हूँ। मैं मानती हूँ कि आपश्री का यह 75वां हीरक वर्ष हमारी आस्था को दृढ़ीभूत करने वाला तथा हीरे की भाँति चमकदार बने। विश्व में धर्म की विजय दिलाने वाले अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित हो।

कैसे शुक्रिया करुं खुदा का इस दिन के लिये,
जिसने भगवान बनाके भेजा हैं हमारे लिये,
मेरी हर पल दुआ, है आपकी लंबी उमर के लिये,
स्वस्थता के लिये, अलमस्तता के लिये।। ✧✧

मन से हारा हुआ इंसान
कभी नहीं जीत सकता

परम पूज्य परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म. के हीरक जन्मोत्सव पर जैन कॉन्फ्रेंस के परिवार का वंदन-अभिनंदन !

आपका तप त्याग एवं सरलता अभिनंदनीय है

- कांतिलाल एच. जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

परम पूज्य आचार्य भगवन् आपके हीरक जन्मोत्सव पर वंदन अभिनंदन करते हुए मैं हृदय से सुखसाता पूछते हुए आपके मंगलमय स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। भगवन् आपका तप-त्याग एवं सरलता अभिनंदनीय है। आपने लगातार 30 वर्षों से ध्यान, मौन एवं एकान्तर तप द्वारा अपनी साधना को नई ऊँचाईयां प्रदान की है।

हमारी कामना है कि आप श्रमणसंघ के चतुर्थ पट्टधर पद पर ऐसी ऐतिहासिक साधनाचर्या का प्रावध ाान करें जिससे हमारा संघ एक विशिष्ट संघ के रूप में गौरव प्राप्त करता रहे। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपका सदैव ऋणी है, जिसने मेरे कार्यकाल में आपके द्वारा श्रमणसंघ को पुनः एकता के सूत्र में बांधकर एक आदर्श उपस्थित किया था। मैं समस्त समाज से निवेदन करूंगा कि आचार्य भगवन की भावना के अनुसार हम अपने संघ में श्रद्धा और अनुशासन का अनुपम वातावरण निर्मित करें। इन्हीं भावनाओं के साथ पुनः-पुनः वंदन-अभिनंदन।

परम पूज्य आचार्य भगवन शतायु हो, चिरायु हो

- अविनाश चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

शांति सरलता एवं मैत्री के मंगल प्रतीक श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य भगवन् डॉ. शिवमुनि जी म. के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर मंगल भावना भाते हुए मैं यही कहूंगा कि आप जैसा ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी आचार्य भगवन् हमें सौभाग्य से प्राप्त हुआ है। आपने अपनी चर्या एवं विचारों से संपूर्ण स्थानकवासी जैन समाज को गौरवपूर्ण स्थान प्रदान कराया हैं। आपने सदैव नवीन कदमों को उठाकर वैचारिक क्रांति करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार से आपने संघ में शांति और समन्वय के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया है उसकी मिसाल दुर्लभ है। मेरी कामना है कि परम पूज्य आचार्य भगवन् शतायु हो, चिरायु हो इसी प्रकार हमें अपनी छत्रा-छाया प्रदान करते रहें।

आप श्री के सान्निध्य में सम्पूर्ण संघ आदर्श मूल्यों के साथ उठ खड़ा हो

- रामकुमार जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

मेरी अनेक वर्षों से आचार्य भगवन से यही गुज़ारिश रही है कि आप संघ में अनुशासन का ऐसा वातावरण बनाएं जिससे कहीं भी अपवादिक, अप्रिय सूचनाओं को सुनने और दुःखी होने का अवसर नहीं मिले। मेरे जैसे अनेक लोगों ने आप श्री जी से यही आग्रह बार-बार दोहराया है। प्रसन्नता की बात है कि वास्तव में आप तो चाहते हैं कि संघ में एकता, प्रेम और अनुशासन का वातावरण बना रहे ताकि परस्पर

मतभेद, मनभेद का कटु अवसर उपस्थित ही न हो, किन्तु यह केवल आपका ही दायित्व नहीं है। हम सबका दायित्व है। इसे हम हृदय से अनुभव करें। स्वयं अनुशासित रहकर ऐसा प्रयास करें कि सारा संघ मजबूती के साथ, आदर्श मूल्यों के साथ उठ खड़ा हो। आप श्री जी के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर मैं इन्हीं भावनाओं के साथ आपश्री जी को शत् शत् नमन-वंदन!

जुग-जुग जियें आचार्य श्री जी म.

- चंदनमल चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

पूज्य आचार्य भगवन् के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर मेरी कामना है कि आप श्री जी की नेश्राय में हमारा धर्म संघ निरंतर वृद्धिमान हो। श्रमणसंघ की जयवंतता को कायम करने में आप सफल हों। आपके आत्मबल, तपोबल और तेजोबल में संपूर्ण समाज में शांति, समन्वय और मैत्रीभाव का संचार हो। आचार्य श्री जी जुग-जुग जियें, इन्हीं भावनाओं के साथ आपके जन्म दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं। कोटि-कोटि वंदन!

सबके मित्र सबके हितैषी हैं पूज्य आचार्य भगवन्

- पारस मोदी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, जैन कॉन्फ्रेंस

हमारा सौभाग्य है कि श्रमणसंघ को वर्तमान में पूज्य आचार्य डॉ. शिवमुनि जी म. के रूप में सबका मित्र, सबका हितैषी उपलब्ध है। आपकी करुणापूर्ण दृष्टि सभी के प्रति मंगल भावनाओं से ओत-प्रोत है। आप सदैव इस बात का स्मरण रखते हैं कि जो भी आपके दर्शन वंदन हेतु उपस्थित हो उसे आत्मलब्धि, आत्म संतोष प्राप्त हो। आपका एकमात्र मिशन यही है कि सर्वत्र शांति मैत्री और समन्वय का वातावरण बना रहे। संपूर्ण विश्व के प्रति सारी मानव जाति के प्रति भी आपका यही दृष्टिकोण है। आप ध्यान में गहरे उतरकर प्रत्येक आत्मा के दुःख-सुख का अनुभव कर चुके हैं। अतः आपके अधरों पर सदैव एक मंगलमयी मुस्कान खेलती रहती है। आपकी प्रेरणा से अजैन बंधुओं में भी जैनत्व के प्रति जो भाव जागरण हुआ है उसे मैंने अपनी आंखों से देखा है, कानों से सुना है। ऐसे विद्वान, ऐसे ज्ञानी, ध्यानी आचार्य भगवन के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर मैं हृदय की अनुभूतियों से नमन करता हूँ, सुखसाता पूछता हूँ।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन की जन्म जयंती समस्त समाज को शुभ हो

- बालचंद खरवड़ जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

संघ के सर्वोच्च पद पर विराजमान आचार्य से समस्त संघ शक्ति पाता है। वर्तमान में परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्य डॉ. शिवमुनि जी म. हमारी ऐसी आध्यात्मिक शक्ति बने हुए हैं जिससे शुभ ही शुभ, मंगल ही मंगल होता रहता है। आपने ध्यान की ओर युवकों को, महिलाओं को, बच्चों को आकर्षित करके भविष्य का सुनहरा संघ कैसा हो इसका संकेत दे दिया है। आपके द्वारा आयोजित आत्म-ध्यान शिविर में जिन-जिन भाग्यशालियों ने हिस्सा लिया है। वे ये अनुभव करते हैं कि आचार्य भगवन् वास्तव में भगवान महावीर द्वारा प्रणीत ध्यान पद्धति के माध्यम से आत्म-कल्याण की सरल साधना का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसे आचरण का अंग बना रहे हैं। मैं आपके हीरक जन्मोत्सव पर आपके प्रयासों की सफलता चाहते हुए ये कामना करता हूँ कि परम श्रद्धेय आचार्य भगवन का जन्म दिवस समस्त समाज को शुभ हो।

संयमपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण हीरक जन्मोत्सव अभिनंदन

– महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिव मुनि जी म. का संयमपूर्ण जीवन जहां अनेकानेक उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है वहीं उनके प्रति आस्था रखने वाले श्रावक-श्राविका वर्ग को उनके श्रीचरणों की चरणरज से जीवन में उत्कर्ष ही मिला। यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उनके जीवन में समता जैसे शब्द को जहां सार्थकता मिली वहीं ज्ञान गंगा भी उनकी वाणी से प्रवाहित होकर संघ व समाज में व्याप्त हो जाती है। ऐसे प्रथम वंदनीय गुरु भगवंत को हीरक जन्मोत्सव पर लख-लख बधाईयाँ।

समाज आचार्य श्री को विनय पूर्वक अभिनंदन

– शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष में हम चतुर्थ पट्टधर पू. आचार्य डॉ. शिवमुनि जी म. का हीरक जन्मोत्सव मना रहे हैं। पू. आचार्य भगवन ने इस वर्ष के सान्निध्य में 24 सितम्बर 2017 को शक्तिपुंज युवा सम्मेलन का आयोजन इन्दौर में होने जा रहा है। इस अवसर पर आचार्यश्री जी युवाओं का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। यदि हम आचार्य भगवन की इस भावना को सही मायनों में अपने जीवन में उतार पाने में सफल हुए तो हमारा आपकी हीरक जयन्ती मनाना सार्थक होगा। आपकी आज्ञानुसार अपने श्रावकीय जीवन को आगे बढ़ाना सार्थक होगा। इन्हीं भावनाओं के साथ मैं आप श्री जी के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर ज्ञान, ध्यान व साधना की अनुमोदना करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा की ओर से आपका विनय पूर्वक अभिनंदन करता हूँ, सुखसाता पूछता हूँ एवं कामना करता हूँ कि आप परम प्रसन्न, स्वस्थ रहकर श्रमणसंघ का नेतृत्व चिरकाल तक करते रहें।

परम पूज्य आचार्य भगवन को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की बहिनों द्वारा हार्दिक वंदन-अभिनंदन

– रूचिरा सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, जैन कॉन्फ्रेंस

परम पूज्य आचार्य डॉ. शिवमुनि जी म. की दृष्टि बड़ी विशाल है। आप संपूर्ण संघ के प्रत्येक अंग का समान दृष्टि से विकास चाहने वाले महासंत हैं। मैंने जब भी आपके दर्शन किए हैं मैंने यह अनुभव किया है कि आप नारी जाति के प्रति भगवान महावीर की तरह ही करुणा से ओत-प्रोत हैं। आप अपने प्रवचनों में अपनी प्रेरणाओं में निरंतर इस बात की अभिव्यक्ति करते रहते हैं कि चतुर्विध संघ में साध्वी एवं श्राविका बहनों का बराबर का योगदान है। यह योगदान संतों एवं श्रावकों से कहीं ज्यादा है। श्रावक समाज आज यदि धर्म सभाओं में आकर जुटता है तो इसके पीछे भी किसी न किसी भव्यात्मा नारी की ही प्रेरणा प्रमुख होती है। ऐसे उदात्त विचारों वाले श्रमणसंघीय आचार्य पूज्य प्रवर डॉ. शिवमुनि जी म. के 71वें जन्म दिवस के अवसर पर मैं महिला शाखा की ओर से विनयवत वंदना करते हुए सुखसाता पूछते हुए ये कामना करती हूँ कि आप शतायु हों, संघ आपके नेतृत्व में निरंतर प्रगतिमान हो।

विश्व विभूति जैन धर्म के प्रखर प्रभावक संत पू. आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनि जी म.

- **अतुल जैन,** दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

श्रमण संस्कृति में जैन धर्म का स्थान प्रमुख एवं प्राचीन हैं। जैन धर्म की प्राचीन परम्परा में जहाँ तीर्थंकर भगवान हुए हैं वहीं उनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले युग प्रधान प्रभावक आचार्यों की एक लम्बी श्रृंखला श्वेताम्बर परम्परा में मिलती है जैन परम्परा में श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा का एक अपना प्रमुख स्थान है। इस संघ के प्रथमाचार्य जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्यं श्री आत्माराम जी महाराज थे। जिन्होंने सर्व प्रथम बीस आगमों पर हिन्दी टीका लिखी और हिन्दी के प्रथम टीकाकार बने। आपने जैन धर्म पर 65 से ज्यादा ग्रंथ हिन्दी में लिखकर हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया। द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंद ऋषि जी म. एवं तृतीय पट्टध ार आचार्य सम्राट पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. हुए हैं।

वर्तमान में श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म. एक उच्च कोटि के ध्यान साधक एवं आत्मार्थी संत हैं। आपका जीवन असंख्य गुणरत्नों का अक्षय-कोष है। जो भी आपके सान्निध्य में पहुंच जाता है वह श्रद्धा और भावना से अभिभूत होकर सदैव के लिए धर्म की शरण में आ जाता है। आपका जीवन कांटों के बीच खिले हुए पुष्प के समान है। वर्तमान युग में मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर तनावग्रस्त एवं रोगों की ओर बढ़ता जा रहा है। उकस मन व शरीर चिंता और दुःख के वातावरण से परिपूर्ण है। आज मानव ने सुख और सुविधा के अत्याधिक साधन जुटाए परंतु उसके जीवन में सुख के बजाय दुःख का वातावरण निर्मित हुआ। ऐसे समय में समाज के समक्ष आत्मा के स्वरूप का बोध , शांति, सुख और आनंदमय जीवन जीने की कल का संदेश लेकर आचार्य श्रीजी का जीवन दर्शन जन-जन तक सुगंध के रूप में प्रभावित कर रहा है।

आपका जन्म रानियां मंडी (हरियाणा) में 18 सितम्बर, 1942 के पवित्र एवं शुभ दिन हुआ। पैतृक स्थल मलौट मण्डी (पंजाब) की भूमि को कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके जन्म से पिता श्री चिरंजीलाल जी का पितृत्व एवं माता श्रीमती विद्या देवी जी की कोख गौरवान्त्ति हुई। आपश्री ने अपने जीवन के 30 वर्ष परिवार और समाज के बीच रहकर व्यतीत किए।

आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनि जी म. की दीक्षा 17 मई, 1972 को हुई। आपश्री जी के दीक्षा गुरु परम पूज्य, बहुश्रुत, जैनागम रत्नाकर, राष्ट्र संत, श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री ज्ञानमुनि जी म. एक प्रखरमेधा सम्पन्न एक तेजस्वी ज्ञानी संत रत्न थे। उनका सम्पूर्ण जीवन हर दृष्टि से उज्ज्वल रहा है। आपने ध्यान पद्धति के साथ-साथ जनमानस को अध यात्म एवं मंगल मैत्री से जोड़ने के लिए एक विश्व मानव मंगल मैत्री अभियान चला रहे। हमारा यह परम सौभाग्य है कि आप जैसे युगपुरुष आचार्य की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में समाजसेवा का कार्य कर पा रहे हैं। आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर पा रहे हैं, पवित्र वाणी श्रवण कर पा रहे हैं।

हीरक जयंती पर यही कामना है कि आप स्वस्थ रहें, चिरायु हो। अपनी आत्मसाधना की रोशनी से समाज के समस्त विकारों का शमन करते हुए अपना दिशा निर्देश देते रहें। इसी मंगल भावना के साथ पुनःपुनः वंदन नमन अभिनंदन। ✧✧

परम्परा संवाहक आचार्यश्री जी

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

तीर्थंकर की अनुपस्थिति में तीर्थ-परम्परा को आगे बढ़ाने वाले आचार्य होते हैं। गच्छाचार प्रकीर्णक में महनीय दायित्व के कारण उन्हें तीर्थंकर तुल्य कहा गया है। ज्ञान-दर्शन, चारित्र की भलीभाँति आराधना कर सके तथा धर्म का सम्यक्, प्रचार-प्रसार कर सके, इसके लिए आगमों में विभिन्न पदों की व्यवस्था की गई हैं स्थानांगसूत्र की वृत्ति और बृहत्कल्पसूत्र में पदों की व्यवस्था इस प्रकार बताई गई है। (1) आचार्य, (2) उपाध्याय, (3) प्रवर्तक, (4) स्थविर (5) गणि, (6) गणधर और (7) गणावच्छेदक।

श्रमण समूह के समान श्रमणी समूह भी आचार्य का ही आज्ञानुवर्ती रहता था। लेकिन श्रमणीवर्ग की दैनन्दिन व्यवस्था समीचीन चलती रहे, श्रमणों तथा श्रमणियों का अवांछनीय तथा अति सम्पर्क न हो, श्रमणियों की व्यवस्था श्रमणियाँ ही आत्मानुशासन के साथ सुविधापूर्वक कर सके, इस दृष्टि से श्रमणीवृंद के लिये प्रवर्तिनी, महत्तरा, स्थविरा और गणावच्छेदिका पदों की व्यवस्था निर्धारित की गई। आचार्य की अर्हता और महत्ता बताते हुए जैन धर्म का मौलिक इतिहास में पू. श्री हस्तीमल जी म. कहते है कि भगवान महावीर के धर्मसंघ में आचार्य (धर्माचार्य) का पद अप्रतिम गरिमापूर्ण और सर्वोपरि माना जाता है। जैन धर्मसंघ के संगठन, संचालन, संरक्षण, संवर्द्धन, अनुशासन एवं सर्वतोमुखी विकास- अभ्युत्थान का मुख्य उत्तरदायित्व आचार्य पर रहता है। समस्त धर्मसंघ में उनका आदेश अंतिम निर्णय के रुप में सर्वमान्य होता है। यही कारण है कि जिनवाणी का यथातथ्य रुप से निरुपण करने वाले आचार्य को तीर्थंकर के समान और सकल संघ का नेत्र बताया गया है। आचार्य की विशेषता बताते हुए कहा गया है :-

सुत्ततथविऊ लक्खणजुत्तो, गच्छस्स मेढ़िभूओ य।
गणतत्ति-विप्पमुक्को, अत्थं वाए ओ आयरियो।।

अर्थात् जो सूत्र व अर्थ - उभय के ज्ञाता हो, उत्कृष्ट कोटि के लक्षणों से युक्त हों, संघ के लिये मेढ़ि अर्थात् आधार स्तम्भ के समान हों, जो अपने गण-गच्छ अथवा संघ को समस्त प्रकार के संतापों से पूर्णतः विमुक्त रखने में सक्षम हों तथा जो शिष्यों को आगमों के गूढार्थ सहित वाचना देते हों, उन्हें आचार्य कहते हैं। जो प्रकार के आचार (ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रचार, तपाचार एवं वीर्याचार) का स्वयं सही रूप से पालन तथा उपदेश करते हैं और अपने शिष्यों से भी उसी प्रकार का आचरण करवाते हैं, उन्हें आचार्य कहा जाता है। आचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व में समग्रता होनी चाहिए। जिससे वैयक्तिक जीवन और संघीय जीवन के सभी अंग सम्पूर्ण और गौरवपूर्ण लगे। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र (चतुर्थ दशा) में आचार्य की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन करते हुए उनकी आठ सम्पदाएं बताई गई हैं, जो इस प्रकार हैं- (1) आचार सम्पदा, (2) श्रुत सम्पदा, (3) शरीर सम्पदा (4) वचन संपदा (5) वाचना सम्पदा (6) मति सम्पदा (7) प्रयोगमति सम्पदा और (8)संगहपरिज्ञा सम्पदा। दशवैकालिक सूत्र (9/1/16) में कहा गया है:-

महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुअसीलबुद्धिए।
संपाविउ कामे अणुत्तराइ, आराइए तोसइ धम्मकामी।।

अर्थात् श्रेष्ठ ज्ञान-ध्यान की प्राप्ति के लिए समाधियोग, श्रुत, शील और बुद्धि के महान धनी

आचार्य की आराधना करनी चाहिए। आचार्य पर संघ का विशेष दायित्व होता है, क्योंकि आचार्य को चलना भी पड़ता है और चलाना भी पड़ता है।

केवलिकालः - इस अवसर्पिणी काल के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण के बाद श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार चौदह पूर्वों के ज्ञाता पंचम गणधर सुधर्मा स्वामी प्रथम आचार्य बने, जबकि दिगम्बर परम्परा के अनुसार गौतम स्वामी को संघनायक का दायित्व सौंपा गया। लेकिन दिगम्बर परम्परा के एक प्राचीन ग्रंथ 'लोक विभाग' में यह संकेत उपलब्ध होता है कि भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनके पट्टधर आर्य सुधर्मा स्वामी बने। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार भगान महावीर के निर्वाण के उपरांत ही प्रथम गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। केवलज्ञानी आचार्य की अर्हताओं से परे सर्वज्ञ सर्वदर्शी हो जाते हैं, इसलिए उन्हें आचर्य नहीं बनाया गया। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद 64वर्ष तक केवलिकाल माना जाता है। दिगम्बर पराम्परा में यह अवधि 62वर्ष मानी जाती है। दोनों ही अवधियों में विशेष अंतर नहीं होने से यह कहा जा सकता है कि केवली काल के बारे में श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्पराएं समान मत रखती हैं। दोनों ही परम्पराएं जम्बू स्वामी को अंतिम केवली मानती हैं। जम्बू स्वामी के निर्वाण के साथ ही केवली काल समाप्त हो जाता है।

श्रुतकेवली कालः- केवली काल के बाद श्रुतकेवली काल शुरु होता है। चौदह पूर्वधर को श्रुतकेवली कहा जाता है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार वीर निर्वाण संवत् 64 से वी.नि.सं. 170 तक 106 वर्ष की अवधि में पाँच श्रुतकेवली हुए - (1) प्रभव स्वामी, (2) शय्यंभव स्वामी, (3) यशोभद्र स्वामी, (4) संभूतविजय, और (5) भद्रबाहु स्वामी।

दिगम्बर परम्परा के अनुसार वी.नि.सं. 62 से 162 तक 100 वर्ष की अवधि में पाँच श्रुतकेवली हुए - (1) विष्णुनन्दि (नन्दि), (2) नन्दिमित्र, (3) अपराजित, (4) गोवर्द्धन, और (5) भद्रबाहु स्वामी।

उपरोक्त पाँचों श्रुतकेवलियों में भद्रबाहु ही एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्हें दोनों ही परम्पराएँ पंचम श्रुतकेवली के रुप में स्वीकार करती है। श्रुतकेवली काल की समाप्ति में दोनों परम्पराओं की कालगणना में आठ वर्ष का अंतर रहता है। आठ वर्ष का यह अंतर अधिक नहीं है। अतः श्रुतकेवली का कालमान दोनों परम्पराओं में लगभग समान है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार श्रुतकेवली काल के बाद आठवे पट्टधर आचार्य स्थूलिभद्र से दस पूर्वधर काल शुरू हुअ, जो आचार्य वज्रस्वामी तक रहा। उनके बाद सामान्य पूर्वधर काल शुरू हुआ, जो सताईसवें पट्टधर आचार्य देवर्द्धि क्षमाश्रमण तक गतिमान रहा। वीर निर्वाण संवत 980ई. सन 453 में देवर्द्धि क्षमाश्रमण के सान्निध्य में वल्लभी में जो आगम वाचना हुई, उसमें सभी आगम शास्त्रों को व्यवस्थित रुप से लिपिबद्ध किया गया। देवर्द्धि क्षमाश्रमण को अंतिम पूर्वधर आचार्य माना जाता है। उनके बाद से सामान्य श्रुतधर काल चल रहा है। मान ज्ञान-ध्यानी आचारवान आचार्यों के कुशल नेतृत्व में श्रमण परम्परा आगे बढ़ रही है। ✧✧

कभी उसको नजर अंदाज ना करो
जो तुम्हारी बहूत परवाह करता हों,
वरना किसी दिन तुम्हें एहसास होगा
के पत्थर जमा करते-करते
तुमने हीरा गवा दिया ।।

आचार्य श्री जी : असीम श्रद्धा के केन्द्र

- प्रभा जैन, देवास (मध्य प्रदेश)

ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः, पूजामूलं गुरोपदम्
मंत्र मूलं गुरोवाक्य, मोक्ष मूल गुरोकृपा।।

अर्थात् ध्यान करना हो तो गुरु के स्वरुप का ध्यान करें, पूजा के लिए गुरु के चरण-स्पर्श करें, मंत्र जप करना है तो गुरु की आज्ञा का पालन करें, मोक्ष की प्राप्ति करना है तो गुरु की कृपा प्राप्त करें।

भारतवर्ष हमेशा संतों की तप भूमि रही है, संत भारतीय संस्कृति के प्राण हैं, ऐसे ही हमारे शासननायक, जैन धर्म दिवाकर युग पुरुष, आत्मज्ञानी, आत्म ध्यानी युगप्रधान आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिवमुनि जी म. है जो मानवता के मसीहा विमल विभूषण हैं आप अपनी आयुष्य के 76वें सोपान पर आरुढ होने जा रहे हैं आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बांधु कैसे?

आप तो समुद्र से सीमातीत हो, क्षितिज से कल्पनातीत हो, आप तो शब्दातीत हो, शब्दातीत हो।।

आपका जन्म शस्य-श्यामला पंजाब के मलौट ग्राम में हुआ। आपकी माताश्री का नाम विद्यादेवी और पिताश्री का नाम श्री चिरंजीलाल हैं। आपका शैशवकाल हमेशा ज्ञान सौरभ से सुरभित, पल्लवित रहा। अपार धन संपत्ति, सुख-समृद्धि भी आपको परिवार के मोह में न बाँध सकी।

आपको कॉलेज, विश्वविद्यालय का वातावरण भी मन को मोहित न कर पाया। आप बचपन से ही ध्यान साधक रहे, मैं कौन हूं? कहा से आया हूं? व मुझे कहां जाना है? ये विचार मन-मस्तिक में हमेशा बने रहते हैं। आप हमेशा इसी चिंतन में डूबे रहते हैं कि प्रभु महावीर की साधना क्या है? भगवान ने कैसे मुक्ति पाई?

आपको अध्ययन के लिए कनाड़ा, कुवैत, कैलिफोर्निया। आदि कई देशों में भेजा गया वहां आपने गहन अध्ययन किया। परंतु आप पर बाहरी वातावरण का कोई असर नहीं हुआ, आखिर आपने सन् 1972 , 17 मई, को गुरुदेव महाश्रमण श्री ज्ञानमुनि जी म. के चरणों में दीक्षित होकर जिनशासन के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित हो गए। आप ज्ञान और ध्यान, ध्यान और ज्ञान में इतने तल्लीन हैं कि आप एक सर्वोत्कृष्ट ध्यान साधक बन गए। लिखते हुए बड़े हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है कि आज सभी आचार्यों में आप ज्ञान ध्यान के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट साधक हैं आपने पीएच.डी और डी.लिट की उपाधि प्राप्त कर जिनशासन की महती प्रभावना की। तप के क्षेत्र में भी आपने जिनशासन की शान को बढ़ाया, तीन दशकों से वर्षीतप की आराधना कर एकांतर तपस्या में रत हैं।

परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य देवेन्द्र मुनि जी म. के बाद से आपने श्रमण संघ का नेतृत्व संभाला। आपके निर्देशन में, आपके सान्निध्य में कई ध्यान शिविर आयोजित होते हैं, जिसमें युवा, बुजुर्ग बच्चे सभी भाग लेते हैं व आत्मा को विशेष प्रकार से शांति मिलती है। आप अत्यंत सरल, सहज, विवेकवान, वात्सला क्षमा की मूर्ति हैं आपकी ज्ञान गंगा, संयम, तप, सब यशस्वी बने। आप जैसे आचार्य श्रीजी को पाकर हम धन्य-धन्य हो गए। अंत में यही कहूंगीः-

संतों के संत शिरोमणि, ध्यान साधक शिवमुनि महान।
पंचम आरे के भवतारक, भगवंत आप विधि विद्वान।।
सदा ही रहे स्वस्थ, लंबी उमर हो, गुरुदेव महान,
पद चरणों में शत-शत नमन, वंदन अभिनंदन।।

✧✧

समाचार - प्रकाश

माता अहिल्या की धर्मनगरी इन्दौर के शिवाचार्य समवशरण में पर्युषण महापर्व की आराधना में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : आत्मज्ञानी, ध्यानयोगी युग प्रधन, परमात्मस्वरूप श्रद्धेय आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म.सा., आगम रत्नाकर युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा., प्रखर वक्ता पूज्य प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. 'निर्भय', श्रमण संघीय वरिष्ठ मंत्री पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म.सा., युवामनीषी पूज्य श्री शुभममुनि जी म.सा. आदि ठाणा-12 एवं विराजित श्रद्धेय विदुषी महासतीवृंद के पावन सान्निध्य में श्रमण संस्कृति के आध्यात्मिक उत्सव पर्वाधिराज पर्युषण की तप व त्याग से साथ आराधना की गई। श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चातुर्मास आयोजन महासमिति के तत्वावधन में पर्व के आठ दिवसीय विविध आयोजनों में प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने धर्मभावना से ओत-प्रोत होकर उत्साह, उल्लास व श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

शिवाचार्य समवशरण रेसकोर्स रोड़ पर हीरक जयंती वर्षावास-2017 के अंतगर्त पर्व के अवसर पर प्रार्थना योग, प्राणयाम, वीतराग सामायिक, अंतगढ सूत्र का श्रमण संघीय सहमंत्री श्री शुभममुनि जी म.सा. द्वारा समधुर वाचन किया गया। प्रवचन सभा के पश्चात दोपहर में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ तथा महासती पूज्य श्री आत्मज्योति जी म. सा. ने कल्पसूत्र का भावपूर्वक वाचन किया। इस अवसर पर भगवान महावीर जन्म वाचन का भक्तिमय आयोजन सम्पन्न हुआ। जैन श्वे. सोश्यलग्रुप टाउन द्वारा भजन प्रतियोगिता एवं कलकत्ता से आये युवा गीतकार श्री सुरेन्द्र बैंगानी की भजन संध्या का भक्तिपूर्ण आयोजन हुआ। पर्व के पावन दिनों में तप आराधकों ने तपसाधना में श्रद्धापूर्वक भाग लिया। युवा तपस्वी पू. श्री सुशील भगोता ने 41 उपवास एवं श्री मन्नालालजी गादिया भी 43 उपवास से आगे 51 उपवाास के लक्ष्य की ओर अग्रसर है। सौ. वर्षा अभय पगारिया ने भी दृढ़ आत्मबल पूर्वक 31 उपवास की तपस्या पूर्ण की। आचार्य भगवंत की प्रेरणा से इस चातुर्मास में 21 मासखमण श्री तपस्या संपन्न हो चुकी है। साथ ही पर्व के आठ दिनों में 115 अठाईयां, उपवास, बेला, तेला, आयंबिल, एकासना की बड़ी संख्या में तपस्याऐं हुई है।

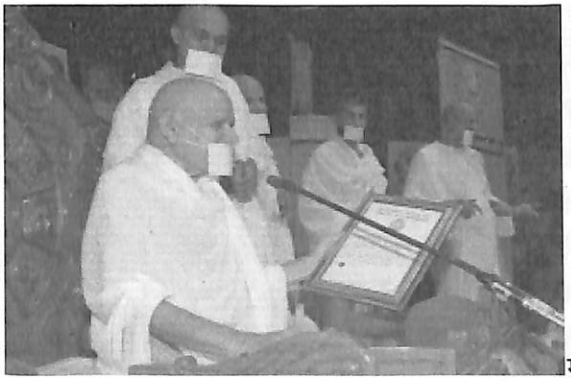

पर्युषण पर्व के अवसर पर अभय प्रशाल की विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा. ने अपने संदेश में कहा कि पर्युषण पर्व हमें 360 दिन की सकारात्मक उर्जा प्रदान करने की ताकत रखता है। यह पर्व जीवन का उत्तरदायित्व तय करता है। यह पर्व हमें विष या अमृत, दुर्गंध या सुगंध, दुःख या सुख आदि में से एक का चुनाव करने का सही उपाय सुझाता है। पर्युषण आत्मध्यान साधना के द्वारा परमात्मा से साक्षात्कार कराने वाला पर्वों में महापर्व है। युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. ने "सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद" के सूत्र का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि जीवन में मैत्री का स्थान महत्वपूर्ण है।

जहां एक दूसरे के हित की बात होती है, वहां मित्रता सार्थक होती है। हमारे अंतरमन में गुणीजनों के प्रति अहोभाव व सम्मान का भाव होना चाहिए। प्रमोद भावों से गुणीजनों का गुणगान करने से हमारें भीतर में अच्छाईयां प्रकट होती है तथा सकारात्मक वातावरण बनता है। प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनि जी म. सा. ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि यह पर्व आत्म जागरण का संदेश देता है। जिसकी दृष्टि बदल जाती है, उसका जीवन बदल जाता है।

पर्व के पावन क्षणों में श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म. सा. ने दान, शील, तप और भावना पर विस्तृत विवेचन के बाद श्रमण संघीय साधु-साध्वीवृंद के स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा हेतु स्थापित श्रमण संघ विकास फण्ड वर्तमान सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला। जिससे प्रभावित होकर अनेक दान दाताओं ने उदार हृदय से श्रमण-श्रमणी वर्ग की इस पुनीत कार्य में व्यापक सहयोग प्रदान किया। पर्युषण पर्व की आराधना हेतु देश के विभिन्न नगरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन पधारे थें। जिनकी चातुर्मास महासमिति ने अनुकूल व्यवस्था कर आतिथ्य सत्कार का लाभ प्राप्त किया।

पर्युषण महापर्व का शिखर दिवस संवत्सरी पर्व क्षमा व मैत्री दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय संत व महासतीवृंद के पावन दर्शन और जिनवाणी श्रवण करनें हेतु शिवाचार्य समवशरण में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। अभय प्रशाल का पूरा परिसर श्रद्धाशील स्त्री-पुरुषों से खचाखच भर गया। आचार्य भगवंत ने विशाल जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह श्रमण संस्कृति का आध्यात्मिक उन्नति का पर्व है। हम संसार के समस्त प्राणियों से मैत्री भाव रखे, जो गुणीजन है उनके प्रति प्रमोद भाव, तथा जो धन अर्जित किया है, उसे गरीब व असहाय लोगों की सेवा-सहायता के लिए दान करें! तत्पश्चात आलोचना पाठ का सामूहिक वाचन हुआ।

सायंकालीन प्रतिक्रमण में लगभग छः हजार श्रद्धालुजनों ने अपने द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में हुए पापों की आलोचना व मिच्छामि दुक्कड़म से आत्मा को शुद्ध व निर्मल बनाने का पुरूषार्थ किया। इस वृहद आयोजन को "गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" का प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। तत्पश्चात महासमिति द्वारा सामूहिक क्षमावाणी का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें श्रावक संघ के सभी पदाधिकारियों एवं उपस्थित जनसमुदाय ने श्रद्धेय आचार्य भगवंत एवं सभी संत व साध्वीवृंद से करबद्ध होकर क्षमायाचना की। पर्युषण पर्व के वृहद आयोजन को सफल बनाने में महासमिति के अध्यक्ष लालाजी श्री नेमनाथजी जी जैन, महामंत्री श्री रमेश जी भंडारी जैन, चेयरमेन श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन, स्वागताध्यक्ष श्री अचलजी चौधरी जैन, श्री सतीश चंदजी तातेड़ जैन, श्री मनोहरलाल जी जैन, संयोजकगण श्री प्रकाशजी भटेवरा जैन, श्री जिनेश्वरजी जैन, श्री राजकुमारजी जैन पंजाबी, महिला सह संयोजकगण-श्रीमती रेणूजी डिपीनजी जैन, सौ. अनिता जी भटेवरा, सौ.सुशीलाजी पोरवाल जैन एवं विभिन्न समितियों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

24 सितम्बर, 2017 को जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा की ओर से इंदौर में आचार्य भगवन पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. एवं युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. के पावन सान्निध्य में शक्तिपुंज युवा सम्मेलन का भव्य

आयोजन होने जा रहा है। हाल ही में इस युवा सम्मेलन के बैनर का अनावरण आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री जी के सान्निध्य में इंदौर श्रीसंघ के पदाधिकारी एवं भक्तजनों के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस बात की युवा शाखा को बड़ी प्रसन्नता है ऐसा राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री शशिकुमार कर्नावट ने सभी युवा साथियों से अनुरोध किया कि इस सम्मेलन में भारी संख्या में पहुंचकर सम्मेलन की शोभा बढ़ायें एवं संतों की अमृतवाणी का लाभ उठावें।

प्रेषक : रमेश भण्डारी जैन

पू. श्री राजाराम मुनि जी म. का चातुर्मास में जप-तप की लहर

शिरुर (महाराष्ट्र) : शिरुर घोड़नदी में गोकुल वृद्धाश्रम में परम पूज्य राजाराम जी म. आदि ठाणा 2 का चातुर्मास तप-जप के साथ सुचारू रूप से हर्षोल्लास के साथ संपन्न हो रहा है। चातुर्मास में तपस्या जोर-शोर के साथ चल रही है। चातुर्मास का संयोजन मुथा परिवार की ओर से श्रीमान् गोकुलचंद जी मुथा, श्री पारस जी मुथा, श्री संतोष जी मुथा एवं परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा किया जा रहा है। मुथा परिवार का अभिनंदन।

प्रेषक : गोकुलचंद मुथा

30 सितम्बर 2017 को जोधपुर (राजस्थान) में होगी वैरागी वरुण जैन की दीक्षा

जोधपुर (राजस्थान) : लोकमान्य सन्त शेरे राजस्थान वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव रूपमुनिजी म. 'रजत' उपप्रवर्तक सलाहकार मरुधरा भूषण पूज्य गुरुदेव श्री सुकनमुनि जी म. तपस्वी रत्न ज्योतिषसम्राट पू. श्री अमृतमुनिजी म. युवप्रज्ञ पू. डॉ अमरेश मुनि जी म. आदि ठाणा 14के पावन सान्निध्य में आश्विन शुक्ला दशमी दिनांक 30 सितम्बर 2017 (विजय दशमी) के पावन दिवस पर महावीर काम्प्लेक्स जोधपुर में वैरागी वरुण जैन, जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करेंगे।

वैरागी वरुण जैन निवासी सारण - सिरियारी श्रीमान वच्छराज जी पीतलिया व श्रीमती संतोषी देवी के सुपुत्र हैं। वैरागी भाई पिछले 7 वर्षों से गुरु सान्निध्य में रहकर जैन धर्म के गूढ़ सिद्धान्त रहस्य व जगत की नश्वरता को जानकर वैराग्य के पथ पर गुरु अमृत की प्रेरणा से बढ़े हैं। आपने अभी तक व्यावहारिक शिक्षा में बीए, एमए और भारतीय दर्शनों की तत्व मीमांसा का समीक्षात्मक अध्यनन विषय पर पीएचडी कर रहे हैं व जैन धर्म की शिक्षा में जैन सिद्धान्त आचार्य तक परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की है। आपकी योग्यता व संयम पथ पर चलने की दृढ़ निश्चयता को देखते हुए पूज्य गुरुदेव पू. श्री रूपमुनिजी म. ने दिनांक 6अगस्त 2017 को गुरुद्वय जन्म जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर भरी सभा में मुमुक्षु वरुण जैन की दीक्षा की घोषणा की है। इस मौके पर मुमुक्षु वरुण जैन ने हर्षाभिव्यक्त करते हुए सभी गुरुभक्तों को दीक्षा महोत्सव में पधारने की भाव भरी विनंती की, इस पावन अवसर पर हिंदुस्तान के कई क्षेत्रों के गुरुभक्त उपस्थित थे।

प्रेषक : वरुण जैन

ज्ञानमुनि की निश्रा में पू. श्री मरुधर-केसरी जयंती

सैदापेट, चेन्नई (तमिलनाडु) : आचार्य हस्ती-शिष्य श्रमणसंघीय संत श्री ज्ञानमुनिजी ने कहा कि चतुर्दशी का विशेष महत्व है। चतुर्दशी सिद्धिदायिनी होती है। मरुधर-केसरी श्री मिश्रीमलजी म. का जन्म चतुर्दशी को ही पाली में हुआ। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, सैदापेट के तत्त्वावधान में मरुधर-केसरी जयंती और रुप-रजत जन्म दिन के उपलक्ष्य में उन्होंने कहा कि मरते को बचाने का कार्य सबसे बड़ा है। वि.सं. 2010 में मरुधर केसरी ने बिलाड़ा में लाठियों का प्रहार सहकर भी मत्स्याखेट रुकवाया। उन्होंने अनेक गायों, बकरों को जीवनदान दिलवाया। गौशालाएँ, बकराशालाएँ खुलवाईं। ज्ञानमुनिजी की प्रेरणा से राजस्थान की बकाराशालाओं के लिए एक लाख सत्ताईस हजार रुपयों का संग्रह हुआ। इस मौके पर महावीरचन्द पोखरणा दम्पती ने युवावय में आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। श्रावकत्रय सुन्दरलाल दुगड़, अशोक तालेड़ा और मल्लीभाई ने मासखमण के प्रत्याख्यान लिये।

प्रेषक : **डॉ. दिलीप धींग**

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलने वाली जिमनास्टिक कु. तनीषा नितिन चोपड़ा का सम्मान

पुणे (महाराष्ट्र) : मात्र 11 वर्षीय पुणे निवास कु. तनीषा नीतिन जी चोपड़ा जैन रिदमिक जिमनास्टिक खिलाड़ी ने हाल ही में दुबई में संपन्न हुए इंटरनेशनल रिदमिक जिमनास्टिक स्पर्धा में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया। इस स्पर्धा में 24 देशों के 375 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। तनीषा ने आज तक अनेकों राज्य स्तरीय स्पर्धाओं में सफलता हासिल की है तथा पदक प्राप्त किये हैं। तनीषा का कहना है कि उसके पिताजी श्री नितिन जी चोपड़ा जैन जोकि जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य है और माताजी सौ. मोनिका जी चोपड़ा की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहा।

कु. तनीषा का सम्मान पुणे में स्व. इंदुमती बंसीलाल जी संचेती ट्रस्ट, ओम गुरु आनंद गौशाला की ओर से हमारे राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री अभय जी संचेती तथा पिंपरी चिंचवड़ जैन महासंघ की ओर से अध्यक्ष प्रो. प्रकाश जी कटारिया जैन, श्री सुरेश जी गादिया जैन एवम् प्रो. श्री अशोककुमार जी पगारिया जैन, कासारवाड़ी जैन श्रावक संघ की ओर से संघ के अध्यक्ष प्रो. श्री प्रकाश जी कटारिया, श्री शांतिलाल जी फुलफगर, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री विलास जी पगारिया जैन के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

प्रेषक : पारस मोदी जैन

कासारवाड़ी में पर्युषण महापर्व पर तपस्याओं की धूम

21 अठाईयों की तपस्या महासती पू. श्री विपुलदर्शना जी म. के चरणों में भेंट

कासारवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र) : मौन साधिका पू. साध्वी रत्ना परम पू. श्री किरणप्रभा जी म. की सुशिष्या, प्रखर व्याख्याता, पू. श्री विपुलदर्शना जी म. का चातुर्मास कासारवाड़ी में बड़े जोर-शोर से संपन्न हो रहा है। अनेकों धार्मिक तथा सामाजिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। नेत्र चिकित्सा शिविर, छात्रों का सम्मान, सामूहिक रक्षाबंधन जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कासारवाड़ी जैन श्रावक संघ की ओर से किया गया। पर्युषण सप्ताह पूर्व महासती पू. श्री काव्यदर्शना जी म. ने 9 की तपस्या की। कासारवाड़ी जेसे छोटे गांव में भी इस तपस्या के तपस्यापूर्ति समारोह में सुशील बहु मंडल ने 21 अठाईयों का संकल्प किया और पर्युषण सप्ताह में 21 अठाईयाँ, जिसमें कुछ महिलाओं ने 9 और 11 की भी तपस्या संपन्न की। यहाँ पर सौ. छाया जी पारख एवम् सौ. गीताबेन सोनीमलीया की 31 दिन की मासखमण तपस्या भी संपन्न हुई। सभी कार्यक्रमों का आयोजन संघ के अध्यक्ष श्री बसंतलाल जी बोरा जैन, कार्याध्यक्ष श्री विलास जी पगारिया जैन, कोषाध्यक्ष श्री रमणलाल जी कर्नावट के नेतृत्व में पार्श्वनाथ युवक मंडल एवम् सुशल बहु मंडल के सदस्यों ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन ने किया। **प्रेषक : किशोर मुणोत**

मुनि कमलेश ने बरक वाली मिठाई पर लाल निशान की सरकार से मांग की

कानपुर (उत्तर प्रदेश) : कानपुर में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय मंत्री, क्रांतिकारी राष्ट्रसंत पू. श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश' ने कहा कि केन्द्र सरकार ने बरक वाली मिठाई को मांसाहारी बताकर प्रतिबंध लगाने की बात करते हुए कहा कि बरक का निर्माण भेड़, बकरियों की आंतों में रखकर बनाया जाता है का विडियों भी जारी किया तो अब सरकार को बरक वाली मिठाई पर लाल रंग निशान लागू करे साथ ही स्वास्थ्य विभाग ने शाकाहारी वस्तु पर हरा निशन व मांसाहारी पर लाल निशान का कानून बनाय एवं सभी धर्माचार्यों से आव्हान किया कि वे बरक वाली मिठाई का बहिष्कार कर जनता भी परहेज करें।

आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. एवं कविरत्न उपाध्याय गुरुदेव पू. श्री केवल मुनि जी म. की जन्म जयंती खोया बाजार जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में मनाई गई। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन,

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, भ्श्री भंवरलाल जी बोहरा जैन, श्री बालासाहेब जी चोरड़िया जैन के साथ श्री पारस जी मोदी जैन आदि मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने भी मुनि श्री कमलेश की क्रांति को स्वीकार करते हुए निर्णया लिया कि जैन कॉन्फ्रेंस स्वागत स्वीकार नहीं करेगी, परन्तु वहां के सेवकों का निष्ठावान कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करेगी। उसी समय स्थानक में काम करने वाले सेवकों का युवाओं का अभिनंदन किया। प्रतिनिधि मंडल ने मुनि श्री कमलेश जी से मार्गदर्शन लिया तथा विकास की रूपरेखा तैयार की। **प्रेषक : स्थानीय श्रीसंघ**

संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष में फ्री मैडिकल कैम्प

लुधियाना (पंजाब) : भगवान महावीर सेवा संस्थान रजि. द्वारा संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष पर नूरवाला रोड़ स्थित श्रीमती विद्यावंति तरसेम लाल जैन चैरिटेबल डिस्पैंसरी इंचार्ज डॉ. संजीव कुमार मेहता जी की देख-रेख में एक फ्री मैडिकल कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में 102 मरीजों के फ्री चैकअप के साथ-साथ फ्री दवाईयाँ भी दी गई। कैम्प का उद्घाटन जैन करेटिव लाईन की डायरैक्टर रमा जैन ने अपने कर-कमलों से किया। रमा जैन ने संस्थान द्वारा किए जा रहे मानव सेवा कार्यों की भूरी-भूरी अनुमोदना की और कहा 'सेवा' जिनका मानव सेवा के प्रति अटूट रिश्ता है वह सकल समाज को सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। इस अवसर पर भगवान महावीर सेवा संस्थान के उप-प्रधान श्री राजेश जी जैन, श्री सुनील जी गुप्ता, श्री राकेश जी अग्रवाल, श्री कुलदीप जी जैन, श्री किरन जी जैन, श्री संजीव कुमार जी, रिधि जी जैन, दिव्यांश जी जैन, राजीव जी वर्मा, डॉ. मंजीत धीर आदि सदस्य उपस्थित थे। **प्रेषक : राजेश जैन**

बलाचौर में संवत्सरी महापर्व बड़ी श्रद्धा से मनाया गया

बालाचौर (पंजाब) : जैन समुदाय की ओर से संवत्सरी महापर्व बड़ी श्रद्धा और उत्साह से मनाया गया। चौमासा हेतु पधारी जैन साध्वियों ने इस अवसर पर सभी अनुयायियों को महावीर जी के उपदेशों पर चल कर अपना जीवन सफल बनाने की प्रेरणा दी। जिलाधीश शहीद भगत सिंह नगर ने जैन पर्व को मुख्य रखते हुए सभी मीट-मछली आदि की दुकाने पहले ही बंद करने के आदेश जारी कर दिए थे। इस दौरान विदुषी महासाध्वी पू. श्री प्रतीकप्रभा जी म., पू. साध्वी श्री यशिका जी म., पू. श्री निर्जरा जी म., पू श्री समर्पण जी म. के दर्शनों का लाभ लिया। शांति जैन, नरेश जैन, राकेश कुमार जैन, विजय जी जैन, शशि जी जैन, प्रफुल जी जैन, अजित जी जैन, सतीश जी जैन, चन्द्रपाल जी जैन, प्रवीन जी जैन, डिम्पी जी जैन, बबलू जी जैन, रिंकू जी जैन, अशोक जी जैन, नरिंदर जी जैन आदि समाज के लोग उपस्थित थे। क्षमापना पर्व पर श्रद्धालुओं को एकत्रित होकर एक-दूसरे से क्षमा याचना की। **प्रेषक : तेज प्रकाश**

श्रद्धाभाव से मनाया गया संवत्सरी पर्व

चण्डीगढ़ : संवत्सरी पर्व के अवसर पर क्षमा का महत्व बताते हुए पू. श्री सौरभ मुनि जी म. ने कहा कि क्षमा एक दैवी गुण है। मानव जीवन में जानते-अजानते भूल का होना स्वाभाविक है तथा क्षमा मांगने पर ही भूल का सुधार होता है। क्षमा मांगने से अहंकार विगलित होता है। यह एक ऐसा विराट गुण है, जिसके आने से अन्य गुण स्वतः ही जीवन में आ जाते है। जैन स्थानक सैक्टर 18 में बड़े श्रद्धा भाव से भक्तगण उपस्थित हुए संवत्सरी पर्व मनाया। **प्रेषक : नीरज जैन**

युवाचार्य पू. श्री मधुकरमुनि जी म. पर विशेष आवरण

चेन्नई (तमिलनाडु) : भारतीय डाक विभाग के छत्तीसगढ़ परिमण्डल ने 12 अगस्त 2017शनिवार को जयगच्छ के नवम् आचार्य एवं श्रमणसंघ के प्रथम युवाचार्य मुनि पू. श्री मिश्रीमलजी 'मधुकर' पर विशेष डाक आवरण (लिफाफा) जारी किया। आवरण पर मधुकरमुनिजी का आशीर्वाद मुद्रा में चित्र तथा उनके समक्ष जैन आगम रखे हुए हैं। सिविक सेंटर भिलाई की ओर से बनाई पहली मुहर में भी मधुकरमुनिजी को उकेरा गया तथा साध्वी उमरावकुँवरजी 'अर्चना' के डाक-टिकट के साथ मुहर अंकित की गई। डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया ने बताया कि **युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी की प्रेरणा से ही रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी के प्रयास से मद्रास विश्वविद्यालय में जैनविद्या विभाग खुला,** जो तमिलनाडु के किसी विश्वविद्यालय में एकमात्र जैनविद्या विभाग है। उनके संयोजन में बत्तीस आगम-ग्रंथों के हिन्दी में अनुवाद, सम्पादन और प्रकाशन का ऐतिहासिक कार्य हुआ।

प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग

मेवाड़ महिला मंडल का समागम

पनवेल (महाराष्ट्र) : मेवाड़ महिला मंडल का समागम महासती पू. श्री अक्षयज्योति जी म. के सान्निध्य में श्री वर्धमान स्थानकवासी मेवाड़ महिला मंडल उपसंघ पनवेल द्वारा आयोजित हुआ। इस समागम में पूरे मुंबई से मेवाड़ महिला मंडल से जुड़ी महिलाएं मेवाड़ महिला मंडल अध्यक्षा अंजना तातेड़ एवं महामंत्री सौ. कंचन सिंघवी जी के नेतृत्व में पनवेल स्थित मेवाड़ भवन में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। मेवाड़ संघ मुंबई की महिला मंडल अध्यक्षा अंजना तातेड़ ने बताया कि समागम का मुख्य उद्देश्य महिला मंडल की महिलाओं को एक छत्र के नीचे लाना साथ ही धर्म संघ की गतिविधियों से अवगत कराना है। यही नहीं पदनाट्यों और अपने-अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त लोगों द्वारा मोटिवेशनल मंच के माध्यम से महिलाओं के बीच जागरूकता फैलाना भी इस समागम का मुख्य उद्देश्य है।

महासती पू. श्री अक्षयज्योति जी म. ने महिला मंडल समागम में आई महिलाओं का मार्गदर्शन अपने मंगल उद्बोधन के माध्यम से किया। सभी महिलाओं को मोटिवेट किया गया। भव्य समागम में प्रमुखा ललिता जी सोंनी, अध्यक्षा अंजना जी तातेड़, कोषाध्यक्षा मंजु जी सिंघवी, उप प्रमुखा रेणू जी बोहरा, सह मंत्री चेतना जी खरवड़, सौ. विजय लक्ष्मी जी, सह-कोषाध्यक्षा सौ. राजकुमारी जी पामेचा, सह मंत्री शिल्पा जी पोखरणा, ललिता जी चोपड़ा, हेमलता जी जैन, मंजु जी काकरेचा, पिस्ता जी चपलोत, संगीता जी संचेती, आशा जी सोलंकी, किरण जी हिंगड़, भारती जी वड़ाला आदि की उपस्थिति रही।

प्रेषक : अंजना तातेड़

पर्युषण पर्व की शुरुआत निःशुल्क दिव्यांग शिविर से

पुणे (महाराष्ट्र) : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी महिला शाखा द्वारा आयोजित मानव सेवा योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान ट्रस्ट उदयपुर एवम् जैन श्रावक संघ औंध के विद्यमान से निःशुल्क पोलियों दिव्यांग शल्य चिकित्सा चयन एवम् उपकरण वितरण विशाल शिविर का आयोजन प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म., पू. श्री प्रशांतऋषि जी म., पू. श्री आलोकऋषि जी म., पू. श्री विनीतदर्शना जी म., पू. श्री तिलोकदर्शना जी म., पू. श्री सुशीलकंवर जी म., पू. श्री प्रीतिसुधा जी म. की माताजी के स्मृति में एवर्म श्री रमणलाल जी म. लुंकड़ के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिरा जी सुराणा जैन, पंचम जोन महाराष्ट्र अध्यक्षा सौ. सुरेखा जी कटारिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सौ. सुनंदा जी भंसाली जैन, कार्याध्यक्षा सौ. मंगल जी धोका जैन, युवा संरक्षक श्री पारस जी मोदी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जी जैन, जैन महासंघ के अध्यक्ष प्राचार्य श्री प्रकाश जी कटारिया जैन, औंध श्रावक संघ के अध्यक्ष शिरीष जी चोपड़ा की उपस्थिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा ने उद्घाटन किया। इस समय माजी नगरसेवक अभय जी छाजेड़, नितीन जी चोपड़ा, प्रकाश जी बोरा, सागरजी सांकला, आदेश जी खिंवसरा, चंदाजी कटारिया जी, निर्मला जी छाजेड़, सुभाष जी सुराणा, रविन्द्र जी बलाई, नितीन जी बांठीया, मृणालिनी जी छाजेड़ आदि मान्यवर उपस्थित थे।

प्रस्तताविक राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा सुनंदा जी भंसाली ने किया। स्वागत एवम् उपकरण की माहिती पंचम ज़ोन अध्यक्षा सौ. सुरेखा जी कटारिया ने दी। सौ. रूचिरा जी सुराणा जैन ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाओं में अच्छे काम करने की क्षमता है। इस क्षमता का पूरा लाभ लेना समाज का काम है। पंचम ज़ोन अध्यक्षा ने कहा कि संत गाडगेमहाराज ने जो कृतिशील संदेश दिया है इस संदेशानुसार रूचिरा जी सुराणा के मार्गदर्शन से काम कर रहे हैं। श्री पारस जी मोदी जैन ने महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले उपकरण की प्रशंसा करते हुए समस दिव्यांग के हित के कार्य की सराहना की। इस समय शिविर में 104 लोगों का चैकअप किया गया। जरुरतमंदों को ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर, वैसाखी का का वितरण किया गया। 104 लोगों में से 17 लोगों का आप्रेशन के लिए चयन किया गया। राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्षा मंजुजी दर्डा के मार्गदर्शन से यह शिविर बड़ी सेवाभाव से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संयोजन सौ. मनीषा जी चोरड़िया, ज्योति जी गांधी, जया जी बोरा, बबीता जी खाटेर, तृप्ती गुगलिया, सुषमा जी लुंकड़, मंगल जी भंसाली, लता जी पगारिया, कविता जी सेठिया, निलीमा जी चंगेड़िया, भारती जी छोरीया, शोभा जी लुंकड़, योगीता जी भंसाली, प्रतिभा सुंदेचा मुथा ने किया। आभार प्रदर्शन पुष्पा जी ओस्तवाल ने किया। सूत्र संचालन साधना जी टाटीया, सपना जी जैन ने किया।

प्रेषक : सुरेखा कटारिया जैन

ऐल्लम गांव में वर्षावास की लहर

ऐल्लम (उत्तर प्रदेश) : आगम ज्ञाता, योगीराज पू. श्री अरुण मुनि जी म. शिष्य पू. श्री मनीष मुनि जी म., पू. श्री अभिषेक मुनि जी म. का ऐल्लम गांव में वर्षावास बड़ी धूमधाम के साथ चल रहा है। गांव में घरों की कमीं के कारण 36 वर्ष के बाद चातुर्मास हो रहा है। यहां पर जैन परिवार के सिर्फ चार ही घर है, लेकिन गांव में सभी जाति के भाई-बहन चातुर्मास का खूब लाभ ले रहे है। संवत्सरी महापर्व तक 115 तेले, 14 अठाई व 11 की तपस्या हो चुकी है। प्रतिदिन प्रवचन में 700 से 800 के करीब भक्तों की संख्या उमड़ रही है। गांव के श्री पवन कुमार जैन-पूर्व मंत्री जीव दया योजना अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस के परिवार श्री इन्द्रसैन जी जैन की ओर से जलपान की व्यवस्था चल रही है। यह जानकारी प्रांतीय युवा शाखा के श्री पुनीत जी जैन ने दी।

प्रेषक : पवन कुमार जैन

श्री पारस जी दुग्गड़ जैन भारत ज्योति पुरस्कार से सम्मानित

धुलिया (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री, महावीर सोशल ग्रुप धुलिया के अध्यक्ष श्री पारस जी दुग्गड़ जैन को हाल ही में इंडियन इंटरनेशनल फ्रैंडशिप सोसायटी की ओर से नई दिल्ली में **'भारत ज्योति'** अवार्ड से सम्मानित किया गया। संरक्षण राज्य मंत्री डॉ. सुभाष जी भामरे और सभी कार्यकर्ताओं ने उनका विशेष अभिनंदन किया।

प्रेषक : पारस मोदी जैन

पनवेल श्रीसंघ के तत्वावधान में 1008 उवसग्गहरं जाप हुआ

पनवेल (महाराष्ट्र) : पनवेल श्रीसंघ के तत्वावधान में प्रखर वक्ता पू. डॉ. श्री अक्षय ज्योति जी म. के सान्निध्य में प्रथम बार १००८ उवसग्गहरं जाप हुआ। इस कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता आमदार श्री चैनसुख जी संचेती अध्यक्ष बी.जे.पी. महराष्ट्र मुख्य अतिथि पनवेल विधायक श्री प्रशांत जी ठाकुर तथा कविता चौथमल जी। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन, कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन के अलावा श्री अनिल जी संचेती, नगर सेवक श्री राजू जी सोनी, महापौर हिना जी गांधी, जिला अध्यक्ष श्री गिरीश जी, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बाला साहेब जी चोरड़िया जैन, श्री बालचंद जी खरवड़ जैन के अलावा श्री अनूप रमेश जी मुथा, श्री निमेश जी रांठौड़, श्री महेन्द्र दिनेश जी सिंघवी, श्री प्रकाश जी सांखला, श्री विमल एम. किरन गोलेछा, श्री राकेश जी लकी, श्री किशोर जी खाबिया, श्री विवेक जी जैन, श्री प्रवीण जी चोरड़िया, श्री पन्नालाल जी कोठारी, श्री ललित सुमित जी चोरड़िया, श्री नितिन जी भंडारी, श्री अनिल जी संचेती श्री महेन्द्र जी पगारिया जैन, श्री तिलोक जी सिसोदिया आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री पारस जी मोदी जैन ने कहा कि मुंबई में अपनी ऊंचाईयों को छूता हुआ यह चातुर्मास एक अद्वितीय है। श्री प्रशांत ठाकुर जी ने कहा कि पनवेल वासियों का असीम प्यार सदा ही उन्हें मिला है। श्री चैनसुख जी संचेती ने कहा कि देश में सबसे बड़ा योगदान जैन समाज का है, जैन समाज एवं सभी से हम प्रभावित है। साध्वी पू. श्री नवकीर्ति जी ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री रणजीत जी कागरेचा जैन ने किया।

प्रेषक : पनवेल श्रीसंघ

समपंधि भोजनम में 2000 को भोजन कराया

चेन्नई (तमिलनाडु) : एस. एस. जैन संघ साहुकारपेट के तत्वाधान में मरुधर केसरी पू. श्री मिश्रीमल जी म. की 126वीं एवं शेरे राजस्थान, वरिष्ठ प्रवर्तक पू. श्री रूपचंद जी म. की 92वीं जन्म जयंती, पू. श्री प्रेमसुख जी म. के 20वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में समपंधि भोजन का आयोजन किया गया। पुरानी धोबीपेट स्थित पांडियन थियेटर में करीब 2000 लोगों को एक साथ बैठाकर भोजन कराया गया। कार्यक्रम में एस. एस. जैन संघ, साहुकारपेट के अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन, मंत्री श्री हस्तीमल जी खटोड़, श्री सिद्धचंद जी लोढ़ा जैन, श्री अनोपचंद जी भिड़कचा जैन, श्री सुमेरचंद जी चोरड़िया जैन, श्री एच. महावीर जी भंडारी जैन, श्री बुधराज जी भंडारी जैन, श्री रमेश जी ओस्तवाल जैन एवं साहुकारपेट संघ के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सहयोग सराहनीय रहा। कार्यक्रम में पुरानी धोबीपेट एवं आस-पास के लोगों ने लाभ उठाया।

प्रेषक : आनंदमल छल्लाणी जैन

कु. सौनल मारु जैन बार्क टीम में शामिल

भीलवाड़ा (राजस्थान) : भीलवाड़ा की कु. सोनल मारु जैन अब देश के परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में काम करेगी। यहां के आरके. कॉलोनी निवासी श्री चंद्रप्रकाश जी मारु की बेटी सोनल की चेन्नई स्थित भाभा एटोमिक रिसर्च सैन्टर में साइंटीफिक ऑफिसर पद पर नियुक्ति हुई है।

प्रेषक : नवरतन सूरिया जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों ने की गुरु भगवंतों से क्षमा याचना

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) : जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय शाखा, युवा शाखा व महिला शाखा के पदाधिकारियों ने त्रयनगर में विराजित श्रमण संघ के गुरु भगवंतों से संवत्सरी के बाद सामूहिक क्षमा याचना की। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय युवा अध्यक्ष सज्जनराज गांधी द्वारा ने बताया कि प्रति वर्ष श्रमण संघ के गुरु भगवंतों से क्षमा याचना करते है। इसी प्रकार इस वर्ष पूरी शाखा के पदाधिकारियों ने गुरु भगवंतों से क्षमा याचना की। सर्वप्रथम टी 19 रानीगंज में विराजित श्रमण संघ के उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. आदि ठाणा, तप गंगोत्री महासती पू. श्री संतोष जी म. आदि ठज्ञणा, रामकोट गुरु गणेश भवन में विराजित जिनशासन चंद्रिका महासती पू. श्री वीरकांता जी म. आदि ठज्ञणा, गायत्री गार्डन में विराजित जिनशासन प्रभाविका अनुष्ठान आराधिका महासती पू. श्री कुमुदलता जी म. आदि ठाणा के दर्शन वंदन व सामूहिक क्षमा याचना की। प्रतिनिधि मंडल में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय पूर्व अध्यक्ष सम्पतराज जी कोठारी, स्वरूपचंद जी कोठारी, सम्पतराज जी डुंगरवाल, पारसमल जी डुंगरवाल, राष्ट्रीय मार्गदर्शक डायचंद जी दक, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य गौतमचंद जी गुगलिया, प्रांतीय अध्यक्ष श्री महावीर जी अलिजार जैन, महामंत्री श्री दिलीप कुमार जी धारीवाल, उपाध्यक्ष श्री सुनील कुमार जी बोहरा जैन, उपाध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मुथा जैन, श्री किशोर जी बोरा, मंत्री श्री अशोक जी चानोदिया जैन, श्री भागचंद जी कोचेटा, श्री अशोक जी नाहर, युवा वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री सुरेन्द्र जी कटारिया, युवा संरक्षक श्री धर्मेन्द्र जी नाहर जैन, युवा अध्यक्ष श्री सज्जनराज जी गांधी, युवा उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी बोहरा, श्री प्रेम जी कोठारी, श्री प्रकाश जी देवड़ा, युवा महामंत्री श्री विक्रम जी कीमती, युवा कार्यकारी महामंत्री श्री अनिल जी ललवानी, युवा कोषाध्यक्ष श्री पवन जी कटारिया, नवीन जी अलिजार, महिला राष्ट्रीय जीव दया योजना अध्यक्षा सौ. पुष्पा जी कीमती जैन, राष्ट्रीय मार्गदर्शक सौ. उर्मिला जी दक, प्रांतीय अध्यक्षा सौ. शोभा जी बोहरा, महामंत्री सौ. ममता जी सांकला, कार्यकारिणी सदस्या सौ. विदया जी डुंगरवाल, सुरेखा जी बोहरा आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : सज्जन गांधी

युवा विचार-विमर्श संगोष्ठी का आयोजन

शक्तिनगर एक्स. (दिल्ली) : सेवा श्रमण महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. के पावन सान्निध्य में श्री ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा दिल्ली प्रदेश के युवा साथियों ने धर्म के प्रति लग्न सेवा भाव के उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए एक सुंदर व्यवस्थित, अनुशासित संगोष्ठी का आयोजन किया। आज के बदलते परिवेश में युवाओं की इस प्रकार की विचार-विमर्श सभाओं की बहुत आवश्यकता है।

युवा शाखा के इस प्रयास की गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट सराहना करता है तथा महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. की युवाओं में जागृति एवं धर्म की भावना की प्रेरणा को मद्देनजर रखते हुए दी गई उपाधि युवा प्रेरिका की अनुमोदना करता है। महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. की पावन प्रेरणा से जनहित में गरीब, दीन-दुःखी, विधवाओं, अपंगों, मंदबुद्धि, झुग्गी बस्ती आदि में सेवा के कार्यक्रम गतिमान है। उसी श्रृंखला में युवाओं की धर्म के प्रति लग्न एवं सेवा भाव भी प्रेरणादायक है। संगोष्ठी के माध्यम से अनेकों साहित्यकारों, अनुभवी समाज सेवियों एवं जैन कॉन्फ्रेंस के सर्वोच्च पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी सरल भाषा में युवाओं को प्ररित किया।

प्रेषक : अजय जैन

जय आत्म जय आनंद जय देवेन्द्र जय शिव

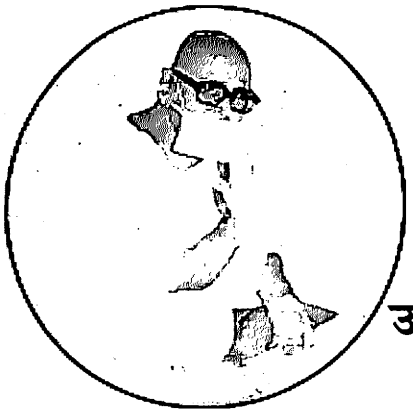

गुरु पुष्कर
जन्म जयंती समारोह

साधना के शिखर पुरुष, विश्व संत
उपाध्याय पू. श्री पुष्कर मुनि जी म. सा.
की 108वीं जन्म जयंती महोत्सव

दिनांक 1 अक्टूबर 2017 को गढ़ सिवाना में
उपाध्याय पूज्य श्री रमेश मुनि जी म. सा.,
प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी म. सा. के पावन सान्निध्य में

दिनांक 1 अक्टूबर 2017 को आनंद दरबार, 'कात्रज', पुणे में
श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री दिनेश मुनि जी म. सा.
के पावन सान्निध्य में

दिनांक 8 अक्टूबर 2017 को धारावी, मुंबई में
उप प्रवर्तक पूज्य श्री नरेश मुनि जी म. सा. के पावन सान्निध्य में

भव्य आयोजनों के साथ मनाई जायेगी
भारत के अनेक नगरों में भव्य आयोजनों के साथ मनाई जायेगी

- वन्दनकर्ता -

प्रशान्त जैन (अध्यक्ष नवकार तीर्थ) मोहित जैन

INDICA PUBLISHERS & DISTRIBUTORS PVT. LTD.

7/31, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi - 110002 (India)
(o) : 011-23243027, 23243028 Fax : 011-23243006
E-mail : ipdplbooks@yahoo.co.in

Adv.

आत्मशुद्धि के महापर्व पर्यूषण के पुनीत अवसर पर
गत वर्ष में हुए ज्ञात अज्ञात अविनय, राग-द्वेष, मनोमालिन्य के लिए क्षमा याचना।

दलीचंद जैन • अशोक जैन एवं समस्त जैन (चोरडिया) परिवार, वाकोद-जलगाव

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई जैन फाऊंडेशन, जळगाव
करुणा.. कल्पना.. कष्ट!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमाँ छुनेका दम.®

अनुभूति स्कूल
अनुभवाधारित निवासी आंतरराष्ट्रीय विद्यानिकेतन

जैन हिल्स्, जलगाव-४२५००१, ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

भारत • अमेरिका • ब्राझील • चिली • पेरू • मेक्सिको • इंग्लंड • फ्रान्स • स्वित्झर्लंड • इटली • रुमानिया • स्पेन • टर्की
इस्त्राईल • रवांडा • केनीया • टांझानीया • श्रीलंका • सिंगापूर • ऑस्ट्रेलिया